अंक 5

वर्ष 2014

टी.ई.सी.

संचारिका

वार्षिक गृह पत्रिका

भारत सरकार

दूरसंचार अभियांत्रिकी केन्द्र

दूरसंचार विभाग

खुर्शीद लाल भवन, जनपथ, नई दिल्ली–110001

www.tec.gov.in

शुभारंभ

हिन्दी पखवाड़ा

एक नजर में.....

कार्यालय प्रमुख
श्री ए.के. मित्तल द्वारा संबोधन

हिन्दी पखवाड़ा 2013
का शुभारम्भ

माँ सरस्वती का आह्वान

सभा में उपस्थित अधिकारीगण
एवं कर्मचारीगण

प्रतियोगिता में भाग लेते प्रतिभागी

संदेश

प्रिय पाठकों,

दूरसंचार अभियांत्रिकी केंद्र की गृह पत्रिका 'संचारिका' का वर्तमान अंक आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अपार हर्ष हो रहा है। इस अंक में हमारे कार्यालय के साथियों तथा उनके परिवार के सदस्यों द्वारा विभिन्न विषयों से संबधित भेजी गयी रोचक एवं पठनीय सामग्री को प्रस्तुत किया गया है।

किसी भी राष्ट्र के विकास का आधार उसकी भाषा होती है। इसी के बलबूते राष्ट्र के विकास का मार्ग प्रशस्त होता है। भारत एक बहुभाषी देश है। परंतु हिन्दी सदैव ही भारत की संपर्क भाषा रही है। इसका एक जीता जागता उदाहरण भारत का स्वतंत्रता संग्राम है जिसमें देश के विभिन्न भाषा – भाषायी लोगों ने एक होकर भाग लिया था। अतः यह सर्वविदित है कि हिन्दी संपूर्ण भारत को एकता के सूत्र में पिरोती रही है। हमारे संविधान निर्माताओं ने इस तथ्य को पहचान कर हिन्दी को राजभाषा के रूप में अपनाने का प्रावधान किया।

अंग्रेजी भाषा की अपनी एक उपयोगिता है। हिन्दी को अपनाना, किसी ओर भाषा का विरोध नहीं है। हम यदि कुछ संपन्न तथा शक्तिशाली देशों को देखें तो पायेंगे कि उनका विज्ञापन अपनी भाषा में पढ़ा लिखा जाता है और वह गौरव से अपनी भाषा में बोलना तथा काम करना पंसद करते हैं। बहुभाषी राष्ट्र होने की दृष्टि से देखा जाये तो भी एक सर्वसम्मत भाषा हिंदी हमें वैज्ञानिक तथा आर्थिक प्रगति में सहायक हो सकती है।

हमें अपनी आने वाली पीढ़ियों के मन में अपनी इस भाषा के प्रति रूचि जगानी होगी और यह एहसास कराना होगा कि अपनी राजभाषा को प्रयोग करना गौरव की बात है। ऐसा करने से ही पीढ़ी दर पीढ़ी हम अपने उद्देश्य में सफल हो सकते हैं। हिंदी साहित्य पढ़ना, हिंदी में लेख लिखना, हिंदी में सोचना आदि इस दिशा में महत्वपूर्ण कदम हैं। मैं, हमारे विभाग के सभी कर्मियों से आहवान् करता हूँ कि वह अपने परिवार के सदस्यों को ''संचारिका'' में कविता, लेख आदि के माध्यम से योगदान करने हेतु प्रेरित करें।

मुझे विश्वास है कि पाठकों को प्रस्तुत अंक सृजनात्मक, रूचिकर एवं सार्थक लगेगा तथा आप अपने बहुमूल्य सुझावों से हमें अवगत कराएंगे ताकि इसके आगामी अंकों को हम आपकी आशाओं के अनुरूप बना सकें।

श्री अजय कुमार मित्तल
वरिष्ठ उपमहानिदेशक
दूरसंचार अभियांत्रिकी केन्द्र

संपादकीय

प्रिय साथियों,

हिन्दी की संभावना अपरिमित है तथा इसकी शब्द संपदा और तकनीकी शब्दावली पर्याप्त सम्पन्न है। एक तकनीकी केन्द्र होने के नाते दूरसंचार अभियांत्रिकी केन्द्र में राजभाषा के प्रति सम्मान का भाव जगाने और मानसिकता बदलने के लिए हम निरन्तर प्रयासरत है।

इसी श्रृंखला की एक और कड़ी के रूप में वार्षिक पत्रिका ''संचारिका'' का यह अंक आपके सम्मुख है।

इस पत्रिका में टी ई सी परिवार के सदस्यों ने आध्यात्मिक, प्रेरणास्पद, मौलिक, गद्य, पद्य, व्यंग आदि रचनाओं के रूप में सहयोग देकर हिन्दी की एक रूचिकर सामग्री प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। इसके अतिरिक्त दूरसंचार नीति शोध, नवप्रवर्तन एवं प्रशिक्षण संस्थान का योगदान भी सराहनीय रहा है।

मैं उन सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों के प्रति आभार व्यक्त करता हूँ जिन्होनें अपनी रचनाएँ भेजकर इस पत्रिका को आपके सामने लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

भविष्य में आपकी इस पत्रिका को और अधिक मुखर बनाने के लिये आपके बहुमूल्य सुझावों की सदैव प्रतीक्षा रहेगी।

सुनील पुरोहित
अध्यक्ष, राजभाषा कार्यान्वयन समिति
उप महानिदेशक (एस.)
दूरसंचार अभियांत्रिकी केन्द्र

संरक्षक एवं मार्गदर्शक
श्री अजय कुमार मित्तल
वरिष्ठ उप महानिदेशक

उप संरक्षक
श्री बाल किशन
उप महानिदेशक (प्रशासन)

संपादक
श्री सुनील पुरोहित
अध्यक्ष, राजभाषा कार्यान्वयन समिति/उप महानिदेशक (एस)

सहयोगी गण
श्री एस.के. भल्ला
श्री शालीन अग्रवाल
श्री संजीव नारंग
श्रीमती सुषमा चोपड़ा
श्री हर्ष शर्मा
श्री राकेश बेदी
श्री अमरदीप

: नोट :
पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार रचनाकारों के निजी विचार हैं।

विषय सूची

क्रं सं.	रचनाएँ	रचनाकार	पृष्ठ सं.
1.	माँ सरस्वती की वन्दना	हर्ष शर्मा	4
2.	पोणमुंडी की सैर	मनोरंजन	5
3.	जिन्दगीः एक पहेली	राहुल यादव	5
4.	गुड़ी पड़वाः सृष्टि का जन्मदिवस	हर्ष शर्मा	6
5.	स्वागत है ऋतुराज तुम्हारा	राजीव शर्मा	10
6.	गज़ल	राजीव शर्मा	10
7.	सत्यार्थप्रकाश	राकेश बेदी	11
8.	नज्म	मनोरंजन	13
9.	जिदंगी	मनीष शुक्ला	13
10.	हंसते मुस्कराते हुए जिन्दगी गुजारिये	राकेश बेदी	13
11.	भारतीय दूरसंचार एवम् वर्तमान परिदृश्य	तृष्णा मण्डल	14
12.	प्रभु से मांगने में कोई खोट न हों	ललन ठाकुर	17
13.	बेटी	सत्यप्रकाश	18
14.	लम्हें जिन्दगी के	सत्यप्रकाश	18
15.	जिन्दगी	सत्यप्रकाश	18
16.	सफ़र	शम्पा साहा	19
17.	हिन्दू धर्म व दर्शन	नरेन्द्र चौबे	20
18.	वो	रामचन्द्र वर्मा 'साहिल'	27
19.	कौन है	रामचन्द्र वर्मा 'साहिल'	27
20.	संत–वाणी	श्रीमती ऊषा कुमारी	28
21.	बेटियाँ	श्रीमती ऊषा कुमारी	28
22.	नया सवेरा	वीरेन्द्र मौर्य	29
23.	वो छोटा पौधा	वीरेन्द्र मौर्य	29
24.	बोल–अनमोलः क्रोध बनाम विश्वास	सुरेश चन्द्र शर्मा	30
25.	राष्ट्र भाषा–हिन्दी	अमरदीप	32
26.	राष्ट्रीय एकता पर हिंदी का प्रभाव	उमेश खेमनानी	34
27.	मेघ मलहार	रमा कमल	34
28.	इस संसार में आने वालों इतना समझ लो	सुरेन्द्र पाल	35
29.	गर्भपात सब पापां रो बाप	सुरेन्द्र पाल	35
30.	अमूल्य रत्न	एस.के.भल्ला	36
31.	मैं किसी को क्या कहुँ	राकेश बेदी	37
32.	संत कबीर दास	राजेश त्रिपाठी	38
33.	गीत	मनोरंजन	41
34.	शायरी	मनोरंजन	41
35.	नये साल की मुबारक	मनोरंजन	41
36.	आशाओं के पार हिमालय के द्वार	प्रीतिका सिंह एवं राहुल यादव	42
37.	वन महोत्सव	ललन ठाकुर	44
38.	संकटों से हम घबड़ाते नहीं	ललन ठाकुर	44
39.	राष्ट्रीय एकता	प्रथी सिंह	45
40.	मन के हारे हार है, मन के जीते जीत	अमरदीप	47
41.	भारतीय संस्कृति की विशेषताएं	अमरदीप	49
42.	हिन्दी कार्यशाला		51
43.	हिन्दी पखवाड़े का आयोजन		52
44.	राष्ट्रीय दूरसंचार नीति शोध, नवप्रवर्तन एवं प्रशिक्षण संस्थान		54

सरस्वती वंदना

हे शारदे मां, हे शारदे मां अज्ञानता से हमें तार दे मां
तू स्वर की देवी है संगीत तुझसे,
हर शब्द तेरा है हर गीत तुझसे,
हम हैं अकेले, हम हैं अधूरे,
तेरी शरण हम, हमें प्यार दे मां,
हे शारदे मां, हे शारदे मां अज्ञानता से हमें तार दे मां....

मुनियों ने समझी, गुणियों ने जानी,
वेदों की भाषा, पुराणों की बानी,
हम भी तो समझें, हम भी तो जानें,
विद्या का हमको अधिकार दें मां
हे शारदे मां, हे शारदे मां अज्ञानता से हमें तार दे मां....

तु श्वेतवर्णी, कमल पे बिराजे,
हाथों में वीणा, मुकुट सर पे साजे,
मन से हमारे मिटा दें अंधेरे,
हमको उजालों का संसार दें मां
हे शारदे मां, हे शारदे मां अज्ञानता से हमें तार दे मां....

हर्ष शर्मा
स.म.अ.दू. (स्वीचिंग)
टी. ई. सी.

कविता

पोणमुंडी की सैर

पोणमुंडी के स्थल पर –
गिरीराज के आँगन में
उन्मुक्त विचरते बादल का
सागर के लहरी गीतों पर
खूब थिरकना, गर्जन करना
कितना सुन्दर !
बोल–बोल रे पागल मनवा
कितना सुन्दर–कितना सुन्दर!!
ओ, चाँद की शीतल बाँहों में
सिमट कर, सोने को हर्षित
और उल्लासित सरिता का
है 'वसुधा की बेटी' जो
नर्तन करती और उछलती
चुनरी का आँचल
फैलाना–कितना सुन्दर!
बोल–बोल रे पागल मनवा
कितना सुन्दर–कितना सुन्दर!!
ओ, नीलगगन की छाया में
गिरीराज के मस्तक पर
श्वेत विहगों के जोड़ो का
कलरव करना और चहकना
ओ, गिरीराज के चरणों में
झरनों के मोहक धुनों पर
हंसी के जोड़ा–जोड़ी का
प्रेमरत हो नर्तन करना और थिरकना–
कितना सुन्दर !
बोल–बोल रे पागल मनवा
कितना सुंदर–कितना सुंदर !!

मनोरंजन
ए.डी.ई.टी.–2010 बैच

जिन्दगीः एक पहेली

ये जिन्दगी तू खास है, इसका मुझे एहसास है।
पूछे कभी कोई अगर, तो मेरा ये जवाब है।।
तुझसे मुझे क्या आस है, कोई नहीं हिसाब है।
ये पूरी इक किताब है, जिसमें तेरा जवाब है।।
बचपन से पढ़ा रहा हूँ मैं, उलझे हुए सवालों को।
पाता हुँ एक जवाब तो, बोनस में दो किताब भी।।
जितना समझ रहा हूँ मैं, उतना उलझ रहा हूँ मैं।
उलझते सुलझते, उलझता ही जा रहा हूँ मैं।।
थक हार कर बस, अब यही सोचता हूँ मैं।
बस कर ये जिन्दगी, कितना सिखाएगी मुझे।।
आती है आवाज ए, तू सुन ले जवाब रहने दे।
जीवन में सराब रहने दे, पलकों पे ख्वाब रहने दे।
मुझे पढ़ ले सभी किनारों से, बस दिल की किताब रहने दे।
पल पल का हिसाब चुकता कर, उम्र भर का हिसाब रहने दे।
चलते चलाते एक दिन, राहुल, तू सीख जायेगा।
जहाँ तू सीख जायेगा, वहीं तक मेरा साथ रे।।।

राहुल यादव
ए.डी.ई.टी.–2010 बैच

संकलन

'गुडी पड़वा' : सृष्टि का जन्मदिवस

भारत का सर्वमान्य संवत विक्रम संवत है जिसका प्रारंभ चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से होता है। ब्रह्मपुराण के अनुसार चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को ही सृष्टि का प्रारंभ हुआ था और इसी दिन भारतवर्ष में कालगणना प्रारंभ हुई थी। कहा जाता है कि –

चैत्र मासे जगद्ब्रह्म समग्रे प्रथमेअनि
शुक्ल पक्षे समग्रे तु सदा सूर्योदये सति। - ब्रह्मपुराण

अर्थात ब्रह्मा ने सूर्योदय होने पर सबसे पहले चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को ही सृष्टि की संरचना शुरू की।

ब्रह्माजी और उनके द्वारा निर्मित सृष्टि के प्रमुख देवी–देवताओं, यक्ष–राक्षस, गंधर्व, ऋषि–मुनियों, नदियों, पर्वतों, पशु–पक्षियों और कीट–पंतगो का ही नहीं, रोगों और उनके उनके उपचारों तक का भी पूजन किया जाता है। इसी दिन में नया संवत्सर शुरू होता है अतः इस तिथि को 'नवसंवत्सर' भी कहते हैं। उन्होनें इस प्रतिपदा तिथि को सर्वोत्तम तिथि कहा था इसलिए इसको सृष्टि का प्रथम दिवस भी कहते हैं।

इस दिन से संवत्सर का पूजन, नवरात्र घटस्थापन, ध्वजारोपण आदि विधि–विधान किए जाते हैं। चैत्र शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा वसंत ऋतु में आती है। इस ऋतु में संपूर्ण सृष्टि में सुन्दर छटा बिखर जाती है।

चैत्र मास की शुल्क प्रतिपदा को गुड़ी पड़वा या वर्ष प्रतिपदा कहा जाता है। इस दिन हिन्दू नववर्ष का आरंभ हेाता है। शुक्ल प्रतिपदा का दिन चंद्रमा की कला का प्रथम दिवस माना जाता है। जीवन का मुख्य आधार सोमरस चंद्रमा ही औषधियों–वनस्पतियों को प्रदान करता है इसीलिए इस दिन को वर्षारंभ माना जाता है।

महान गणितज्ञ भास्कराचार्य ने इसी दिन से सूर्योदय से सूर्यास्त तक दिन, महीने और वर्ष की गणना करते हुए 'पंचागं' की रचना की। इसलिए 'प्रतिपदा' के दिन ही नया पंचांग लागू होता है।

इसी दिन से ग्रहों, वारों, मासों और संवत्सरों का प्रारंभ गणितीय और खगोल शास्त्रीय संगणना के अनुसार माना जाता है। आज भी जनमानस से जुड़ी हुई यही शास्त्रसम्मत कालगणना व्यावहारिकता की कसौटी पर खरी उतरी है। चैत्र मास की शुक्ल प्रतिपदा को महाराष्ट्र में 'गुड़ी पड़वा' कहा जाता है। गुड़ी का अर्थ 'विजय पताका' होता है।

'गुडी पड़वा' का इतिहास :

इस नवसंवत्सर का इतिहास बताता है कि इसी दिन आज से 2070 वर्ष पूर्व 'उज्जयनी नरेश महाराज विक्रमादित्य' ने विदेशी आक्रांत शकों से भारत–भू का रक्षण किया और इसी दिन से काल गणना प्रारंभ की। कहा जाता है कि देश की अक्षुण्ण भारतीय संस्कृति और शांति को भंग करने के लिए उत्तर–पश्चिम और उत्तर से विदेशी शासकों ने इस देश पर आक्रमण किए और अनेक भूखंडो पर अपना अधिकार कर लिया और अत्याचार किए जिनमें एक क्रूर जाति के शक तथा हूण थे। ये लोग पारस कुश से सिन्ध आए थे। सिन्ध से सौराष्ट्र, गुजरात एवं महाराष्ट्र में फैल गए और दक्षिण गुजरात से इन लोगों ने उज्जयिनी पर आक्रमण किया। शकों ने समूची उज्जयिनी को पूरी तरह विधवंस कर दिया और इसी तरह इनका साम्राज्य विदिशा और मथुरा तक फैल गया। इनके क्रूर अत्याचारों से जनता में त्राहि–त्राहि मच गई तो मालवा के प्रमुख नायक विक्रमादित्य के नेतृत्व में देश की जनता और राजशक्तियां उठ खड़ी हुई और इन विदेशियों को खदेड़कर बाहर कर दिया।

इस पराक्रमी वीर का जन्म अवंति देश की प्राचीन नगर उज्जयिनी में हुआ था। इनके पिता महेन्द्रादित्य गणनायक और माता मलयवती थी। इस दंपति ने पुत्र प्राप्ति के लिए भगवान भूतेश्वर से अनेक प्राथनाएं एवं व्रत उपवास किए। सारे देश में शक के आतंक से मुक्ति दिलाने के लिए विक्रमादित्य को अनेक बार उससे उलझना पड़ा जिसकी भयंकर लड़ाई सिन्ध नदी के आस–पास करूर नामक स्थान पर हुई जिसमें शकों ने अपनी पराजय स्वीकार की। इस तरह महाराज विक्रमादित्य ने शकों को पराजित कर एक नए युग का सूत्रपात किया जिसे 'विक्रमी शक संवत्सर' कहा जाता है। सबसे प्राचीन कालगणना के आधार पर ही प्रतिपदा के दिन को विक्रमी संवत के रूप में अभिषिक्त किया।

भारत के विभिन्न राज्यों में गुडी पड़वा अलग-अलग नामों और तरीकों से मनाया जाता है :

* आंध्रप्रदेश, कर्नाटक और महाराष्ट्र में सारे घरों को आम के पेड़ की पत्तियों के बंदनवार से सजाया जाता है। सुखद जीवन की अभिलाषा के साथ–साथ ये बंदनवार समृद्धि व अच्छी फसल के भी परिचायक होते हैं।

* आंध्रप्रदेश में युगादि या उगादि तिथि कहकर इसकी उदघोषणा की जाती है। इस अवसर पर आंध्रप्रदेश में घरों में 'पच्चड़ी/प्रसादम' के रूप मे बांटा जाता है। कहा जाता है इसका निराहार सेवन करने से मानव निरोगी बना रहता है। चर्म रोग भी दूर होता है। इस पेय में मिली वस्तुएं स्वादिष्ट होने के साथ–साथ आरोग्यप्रद होती हैं।

* महाराष्ट्र में पूरनपोली (मीठी रोटी) बनाई जाती है। इसमें जो चीजें मिलाई जाती हैं, वे हैं गुड, नमक, नीम के फूल, इमली और कच्चा आम। गुड मिठास के लिए, नीम के फूल कड़वाहट मिटाने के लिए और इमली व आम जीवन के खट्टे–मीठे स्वाद चखने का प्रतीक होती हैं। यूं तो आजकल आम बाजार में मौसम से पहले ही आ जाता है, किंतु आंध्रप्रदेश, कर्नाटक और महाराष्ट्र में इसी दिन से खाया जाता है। 9 दिन तक मनाया जाने वाला यह त्योहार दुर्गापूजा के साथ–साथ रामनवमी को संपन्न होता है।

* सिन्धु प्रांत में इस नवसंवत्सर को 'चेटी चंड' (चैत्र का चंद्र) नाम से पुकारा जाता है जिसे सिन्धी हर्षोल्लास से मनाते हैं।

* कश्मीर में यह पर्व 'नौराज' के नाम से मनाया जाता है जिसका उल्लेख पंडित जवाहर लाल नेहरू ने अपनी आत्मकथा में लिखा है कि वर्ष प्रतिपदा 'नौराज' यानी 'नवयूरोज' अर्थात् 'नया शुभ प्रभात' जिसे लड़के–लड़कियां नए वस्त्र पहनकर बड़ी धूमधाम से मनाते हैं।

* उत्तर भारत में हिन्दू संस्कृति के अनुसार नवसंवत्सर पर कलश स्थापना कर 9 दिन का व्रत रखकर मां दुर्गा की पूजा प्रारंभ कर नवमी के दिन हवन कर मां भगवती से सुख–शांति तथा कल्याण की प्रार्थना की जाती है जिसमें सभी लोग सात्विक भोजन, व्रत, उपवास तथा फलाहार कर नए भगवा झंडे तोरण द्वार पर बांधकर हर्षोल्लास से मनाते हैं।

'गुडी पड़वा' से जुड़ी मान्यताएं :

* एक प्राचीन मान्यता है कि आज के दिन ही भगवान राम जानकी माता को लेकर अयोध्या लौटे थे। इस दिन पूरी अयोध्या में भगवान राम के स्वागत में विजय पताका के रूप में ध्वज लगाए गए थे। इसे ब्रह्म ध्वज भी कहा गया।

* एक अन्य मान्यता है कि ब्रह्माजी ने वर्ष प्रतिपदा के दिन ही सृष्टि की रचना की।

* श्री विष्णु भगवान ने वर्ष प्रतिपदा के दिन ही प्रथम जीव अवतार (मत्स्यावतार) लिया था।

* यह भी मान्यता है कि शालिवाहन ने शकों पर विजय आज के ही दिन प्राप्त की थी इसलिए शक संवत्सर प्रारंभ हुआ।

* मराठी भाषियों की एक मान्यता यह भी है कि मराठा साम्राज्य के अधिपति छत्रपति शिवाजी महाराज ने वर्ष प्रतिपदा के दिन ही हिन्दू पदशाही का भगवा विजय ध्वज लगाकर हिन्दू साम्राज्य की नींव रखी।

* कई लोगो की मान्यता है कि इसी दिन भगवान राम ने बालि के अत्याचारी शासन से दक्षिण की प्रजा को मुक्ति दिलाई। बाली के त्रास से मुक्त हुई प्रजा ने घर–घर में उत्सव मनाकर ध्वज (गुड़िया) फहराए। आज भी घर के आंगन में गुड़ी खड़ी करने की प्रथा महाराष्ट्र में प्रचलित है

* विक्रम संवत के महीनों के नाम आकाशीय नक्षत्रों के उदय और अस्त होने के आधार पर रखे गए हैं। सूर्य, चन्द्रमा की गति के अनुसार ही तिथियां भी उदय होती है। मान्यता है कि इस दिन दुर्गाजी के आदेश पर ब्रह्माजी ने सृष्टि की रचना की थी। इस दिन दुर्गाजी के मंगलसूचक घट की स्थापना की जाती है।

* सूर्य में अग्नि और तेज हैं और चन्द्रमा में शीतलता, शांति। समृद्वि के प्रतीक सूर्य और चन्द्रमा के आधार पर ही सायन गणना की उत्पत्ति हुई है। इससे ऐसा सामंजस्य बैठ जाता है कि तिथि वृद्धि, तिथि क्षय, अधिकमास, क्षय मास आदि व्यवधान उत्पन्न नहीं कर पाते। तिथि घटे या बढ़े, लेकिन सूर्यग्रहण सदैव अमावस्या को होगा और चन्द्रग्रहण सदैव पूर्णिमा का ही होगा।

* ऐसा माना जाता है कि इस दिन महाराज युधिष्ठिर का भी राज्याभिषेक हुआ।

* महर्षि दयानंद द्वारा आर्य समाज की स्थापना भी इसी दिन की गई। इस दिन तामसी भोजन, मांस–मदिरा आदि का त्याग भी करते हैं। प्रतिपदा का यह शुभ दिन भारत राष्ट्र की गौरवशाली परंपरा का प्रतीक है।

उपसंहार:–

पुराने जमाने में हमारे देश में शिक्षा तथा राजकीय कोष आदि के चालन संचालन की शुरूआत मार्च/अप्रैल के महीने में आने वाली चैत्र प्रतिपदा को ही की जाती थी।

यह समय दो ऋतुओं बसंत और शरद का संधिकाल है। प्रकृति नया रूप धर लेती है। चैत्र ही एक ऐसा महीना है जिसमें वृक्ष तथा लताएं पल्लवित व पुष्पित होती हैं जिसे मधुमास भी कहते हैं। इतना ही नहीं, यह वसंत ऋतु समस्त चराचर को प्रेमाविष्ट करके समूची धरती को विभिन्न प्रकार के फूलों से अलंकृत कर जनमानस में नववर्ष के उल्लास तथा उमंग का संचार करती है। प्रकृति नवपल्लव धारण कर नवसंरचना के लिए तैयार होती है।

मानव, पशु पक्षी और यहां तक कि जड़ चेतन प्रकृति भी प्रमाद और आलस्य को त्याग सचेतन हो जाती है। इसी समय बर्फ पिघलने लगती है। आमों पर बौर आने लगता है। प्रकृति ही हरीतिमा नवजीवन का प्रतीक बनकर हमारे जीवन से जुड़ जाती है। बसंतोत्सव का भी यही आधार है इसलिए बसंत ऋतु को ऋतुराज भी कहा जाता है। अपने लेख को यही विराम देते हुए मैं यह कामना करता हूँ यह गुड़ी पड़वा आपको खुशी, शांति और समृद्धि, स्वास्थ्य और धन दें।

हर्ष शर्मा
स.म.अ.दू. (स्वीचिंग)
टी. ई. सी.

कविता

स्वागत है ऋतुराज तुम्हारा

बदला मौसम, प्रफुलित तन मन बदला आँगन सारा,
स्वागत है ऋतुराज तुम्हारा।
धरती उदास मन सहमा सा था, आशा का संचार किया
परे झाड़ कर पात पुराने, फूलों से नव श्रृंगार किया
अवसादों ने किया किनारा,
स्वागत है ऋतुराज तुम्हारा।
ठिठुरन से जो सोये पड़े थे, धीरे–धीरे जाग रहे हैं
कलियाँ फूल बनी इतराई, पर्ण शाखा से झाँक रहे हैं
अति सुन्दर संसार हमारा,
स्वागत है ऋतुराज तुम्हारा।
तितली उड़ती डाल डाल पर, भवरों का दल करता गुंजन
कोयल कूक रही पेड़ों पर, मोह रहा मोरों का नर्तन
झूम उठा वन उपवन सारा,
स्वागत हैं ऋतुराज तुम्हारा।
पीली चादर डाल के सिर पे, खेतों ने श्रृंगार रचाया
रंगबिरंगी ओढ़ चुनरिया, धरती ने आँचल लहराया
मलयज के झोकों ने पुकारा,
स्वागत है ऋतुराज तुम्हारा।
धरा, पवन, नभ, जीव जगत के, मधुमास प्रिय हो तुम सब के
इंद्रधनुष सी छटा तुम्हारी, जीवन को सतरंगी कर दे
पत्थर से फूटी प्रेम की धारा,
स्वागत है ऋतुराज तुम्हारा।
यूं ही सदा तुम आते रहना, अमृत रस बरसाते रहना
सुंदर, पावन पुष्प खिला कर, मन बगिया महकाते रहना
कोटि कोटि आभार तुम्हारा
स्वागत है ऋतुराज वसन्त तुम्हारा।

ग़ज़ल

एहसास ए गुनाह इस कदर तारी रहा,
जीना, उम्र भर, हमको बहुत भारी रहा
मोहब्बत का हश्र बयां करें कैसे,
वो ना दुश्मन, ना दोस्तों में बाकी रहा।

वो चला तो गया कह कर, जा तुझको माफ किया लेकिन,
तू कातिल है यकी की मेरे, चश्मे नम में उसके ये इजहार रहा।

चला तो आया हूँ दूर, बहुत दूर उनसे लेकिन
यादों की सलाखों में, दिल हमेशा गिरफ्तार रहा

सदा तो उससुर्खरू ने, फिर भी दी थी मुझको
खुद हममें उनसे, नज़र मिलाने का हौंसला ना रहा।

राजीव शर्मा
(सहायक महानिदेशक (स्थापना),
राष्ट्रीय दूरसंचार नीति शोध, नवप्रवर्तन एवं प्रशिक्षण संस्थान)

संकलन

ॐ सत्यार्थप्रकाश ॐ

सत्यार्थप्रकाश ग्रन्थ के रचियता जगत्–प्रसिद्ध महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती जी हैं। ये ग्रन्थ उदयपुर में सम्वत् 1939 (सन् 1882) को पूर्ण हुआ, इसी कारण वर्ष 1982 में सत्यार्थप्रकाश शताब्दी बड़े समारोह से मनाई गई। इस समय भारत में जितने क्रान्तिकार्य हो रहे है, उन सबके बीज–वपन के पश्चात् अंकुरीकरण सिंचन व पोषण उस महामानव के तप और त्याग का फल है।

प्रथम समुल्लास : देवी–देवता अलग–अलग नहीं हैं। एक ही निराकार ईश्वर के विभिन्न गुण वाचक नाम हैं, सर्वशक्तिमान परमेश्वर की भिन्न–भिन्न शक्तियों के प्रतिनिधि।

द्वितीय समुल्लास : बच्चे के निर्माण की नींव पहले पाँच सालों में माता–पिता की देखरेख में होती है। गुरू उन्हें बाद में शिक्षा देता है।

तृतीय समुल्लास : शिक्षा सम्पूर्ण, व्यापक एवं सर्वांगीण होनी चाहिए। वेदादि का ज्ञान प्रत्येक के लिए अनिवार्य होना चाहिए। आधुनिक विज्ञान पढ़ना भी जरूरी है। सच्चा ब्रह्मचारी ही सच्चा नागरिक और राजनेता बन सकता है।

चतुर्थ समुल्लास : विवाह संयमित जीवन की नींव डालता है योग की नहीं। गृहस्थ का उत्तरदायित्व सबसे बड़ा है। गृहस्थ के कुछ निश्चित कर्त्तव्य है। वह समाज की एक धुरी है।

पंचम समुल्लास : सन्यासी बनने का अधिकार हर किसी को नहीं है। संन्यासी समाज का सबसे योग्य मार्गदर्शक होता है। वानप्रस्थी घर की चिन्ता से ऊपर उठकर अपनी और संसार की उन्नति में लगता है।

षष्ठ समुल्लास : वैदिक आर्दश का राजा, प्रजा की सर्वसम्मति से चुना जाता है। वह जनता के योग्यतम प्रतिनिधियों की सभा और समिति के जरिए राज्य चलाता है। सच्चा राजा सदाचारी, परमज्ञानी एवं अत्यंत

प्रबुद्ध होना चाहिए।

सप्तम समुल्लास : वेद ही सच्चा ईश्वरीय ज्ञान है। वेद चार हैं। उनमें पशुहिंसा नहीं है। वे सब सत्य विद्यायों की पुस्तक हैं। ईश्वर, जीव और प्रकृति ये तीनों नित्यं है। ईश्वर सत्–चित्–आनन्द स्वरूप है। जीव सत्चित् स्वरूप है। प्रकृति केवल सत् स्वरूप है।

अष्टम समुल्लास : सृष्टि–रचना एक नित्य प्रक्रिया है। प्रकृति की इस रचना में प्रेरणा ईश्वर देता है। प्रकृति पंचमहाभूतात्मक है। सात पदार्थ और नौ द्रव्य सम्पूर्ण रचना और जगत के कारण हैं।

नवम समुल्लास : आत्मा (जीव) नित्य है। वह कर्म करने में स्वतंत्र, किन्तु फल भोगने में परतत्रं (ईश्वराधीन) है। जन्म–मरण का क्रम अनिवार्य है। 'मुक्ति' सदा एक काल सीमा तक रहती है। जगत् में बन्धन और मोक्ष अपने हाथ है।

दशम समुल्लास : सदाचार जीवन की उन्नति का मूल मन्त्र है।

एकादश समुल्लास : भारत में जितने मतमतान्तर फैले हैं, वे वेद की बातों को अलग समझने के कारण,अलग दिखाई देते हैं। वेद–विरूद्ध मतों को छोड़ कर, हमें वेदानुकूल बातें ही अपनानी चाहिए।

द्वादश समुल्लास : अनीश्वरवादी मत भारत में भी थे। हमें आज भी इनसे सावधान रहने की आवश्यकता है।

त्रयोदश समुल्लास : ईसाई मत में बहुत सी मूल बातें वेदानुकूल है। हमें सभी वेदानुकूल तथ्यों को ग्रहण करना चाहिए।

चतुर्थदश समुल्लास : कुरान में भी वेदानुकूल बहुत सी बातें हैं। जो हमारे जीवन के मार्गदर्शन में सहायता करती हैं।

राकेश बेदी
सलाहकार (नेटवर्क)

कविता

नज्म

अल्फाज़े इश्क ये झूठी हैं, प्यार झूठा है,
दगा ने जीती है बाजी, वफा को लुटा है।
मुर्दों की हँसी पर फिदा है जिन्दे दिल,
हवस के चेहरे पे वफा का नक़ाब झूठा है।
जिन्दा है अगर दिल तो जिन्दगी मुश्किल,
जियो वह जो हकीकत है, ख्वाब झूठा है।
मुर्दों के इस शहर में जिन्दा किसको कहें
सवाल यह हकीकत है, जवाब झूठा है।
हुस्न की गलियों में यारों पाँव न रखना,
यह सच है कि हुस्न का शबाब झूठा है।

मनोरंजन
ए.डी.ई.टी.–2010 बैच
दूरसंचार अभियांत्रिकी केंद्र

शायरी

जिंदगी

मुझसे मतलब न पूछ ए मतलबी यार,
तेरे मतलब ने मेरी जिंदगी तबाह की है,
मैं जिस आशियाने में रहता था तेरे सामने,
तूने पूरी बस्ती मेरे सामने उजाड़ दी है.....।
कुछ कहते थे कसूर रहा होगा तेरा शायद,
मैंने अपने आपको हर वक्त बेकसूर पाया है,
जिन गुनाहों से बख्सा है तूने मुझे,
न गुनाहों की खुशी तेरे चेहरे पे दिखाई दी है.....।
आज बारिश भी कुछ घर छोड़कर गिरती है,
उन्हें भी पता है मेरा घर बिखर रहा है,
तेरी उलफतों ने बेहोश कर दिया है मुझे,
जाने क्या जालिम तूने मुझे बेहोशी की दवाई दी है.....।

मनीष शुक्ला
स.म.अ.दू.
(टर्म सेल, दिल्ली)

हंसते मुस्कराते हुए जिन्दगी गुजारिये

हिम्मत न हारिये, प्रभु न विसारिये।
हंसते मुस्कराते हुए, जिन्दगी गुजारिये।।
हंसते मुस्कराते हुए, जीना जिनको आ गया।
टुटे हुए दिलों को, सीना जिनको आ गया।।
ऐसे देवताओं के, चरणों को पखारिये
उनकी तरह नेक बन के, जिन्दगी गुजारिये....हंसते
काम ऐसे कीजिये कि, जिनसे हो सबका भला
बातें ऐसी कीजिये कि, जिनसे हो सबका भला
बातें ऐसी कीजिये, जिनमें हो अमृत भरा
मीठी बोली बोल सबको, प्रेम से पुकारिये
कड़वे बोल बोल के न, जिन्दगी गुजारिये..हंसते
मुश्किलों मुसीबतों का, करना है जो खात्मा
हर समय कहिये, तेरा शुक्र है परमात्मा
गिले शिकवे कर के, अपना हाल न बिगाड़िये
जैसे, प्रभु रखे वैसे जिन्दगी गुजारिये..हंसते
शुभ कर्म करते हुए, दुख भी अगर पा रहे
पिछले पाप कर्मो का, भुगतान ही भुगता रहे
आगे मत उठाइये, पिछले बोझ उतारिये
गलतियों से बचते हुए, जिन्दगी गुजारियें..हंसते
दिल की नोट बुक पे, बातें नोट कर लीजिए
बनके सच्चे सेवक, सच्चे दिल से अमल कीजिए
करके अमल बनके कमल, तरिए और तारिए
जग में जगमाती हुई, जिन्दगी गुजारिए..हंसते

राकेश बेदी
सलाहाकार (नेटवर्क)

लेख

भारतीय दूरसंचार एवम् वर्तमान परिदृश्य

आज के तकनीकी युग में दूरसंचार की महत्ता सर्वविदित है। आम शब्दों में, दूरसंचार को हम कई नामों से पहचानते हैं, टेलिफोन, मोबाईल फोन, पेजर और पता नही क्या–क्या। सबसे तीव्रता से उन्नति करने वाले उद्योग के होने के साथ–साथ इस क्षेत्र में अनुसंधान एवम् विकास (R&D) ने भी काफी प्रगति की हैं। लोगों तक इसकी पहुँच का अंदाजा तो आप इस बात से ही लगा सकते है कि बच्चों में खिलौने के रूप में मोबाइल फोन सबसे लोकप्रिय हैं और अगर वह असली हो तो क्या कहने, बच्चा तो माता–पिता को ही भूल जाए। वो अलग बात हैं कि मोबाइल से होने वाले विकिरण के बारे में सभी देश चिंतित है। अंतराष्ट्रीय दूरसंचार संघ (ITU) और विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) भी समय–समय पर दिशा निर्देश जारी करते हैं। जीवन में इतिहास का अपना स्थान है। यह हमारे विचारों को आधार प्रदान करता है। आज हम कुछ महान अविष्कारको के बनाये स्वप्न लोक में रह रहे हैं, तो चलिए दूरसंचार के इतिहास के साथ आगे बढ़ते है।

आधुनिक दूरसंचार की दिशा में पहल एलेस्संड्रो वोल्टा के इलेक्ट्रोनिक सेल के अविष्कार से हुई। इसके बाद अगला चरण टेलीग्राफ और समुएल मोर्से के टेर्नरी कोड (पोइंट, लाइन और स्पेस) के द्वारा प्रत्येक अक्षर और संख्या को इंगित करने की खोज को कह सकते हैं। जिसमें ध्वनि तंरगों को विद्युत तंरगों में और विद्युत तंरगों को ध्वनि तरंगो में बदलने की क्षमता थी (माइक्रोफोन और रिसिवर)। इसके बाद कई नवाचार (Innovation) संचार के क्षेत्र में जैसे, मर्कोनी की वायरलेस टेलीग्राफ (रेडियो) की खोज, वाल्व एम्प्लिफायर, टेलीविजन की खोज, ट्रांजिस्टर की खोज, इंट्रिग्रेटैड सर्किट और माइक्रोप्रोसेसर की खोज के बाद इलेक्ट्रोनिक्स दूरसंचार की दुनिया का एक आधारभूत हिस्सा बन गया। पी सी एम (Pulse Code Modulation) तकनीक की खोज ने डिजिटल संचार के युग की शुरूआत की। जिसके बाद पैकेट स्विच नेटवर्क और टीसीपी/आइपी प्रोटोकाल ने इंटरनेट नामक जाल की अवधारणा को संभव बनाया और विभिन्न प्रकार के इलेक्ट्रानिक उपकरणों के बीच संसार को मजबूत आधार प्रदान किया। जिसके उदाहरण लैपटॉप, सेल फोन, आइपाट और जी.पी.एस. है। अंततः हम आज के युग में है, जहाँ प्रौद्योगिकी हमारी आसमान में उड़ती सोच का पूरा साथ देने के साथ ही उसे मुट्ठी में भर लेने का हौसला भी देती हैं।

चाहे हम समाज के किसी भी वर्ग से सम्बन्ध रखते हो, अपने अन्दर बैठे भारतीय को नहीं छुपा सकते इसका आभास मुझे अपने विदेशों मे अध्ययनरत मित्रों, सहपाठियों और सहकर्मियों से बातचीत के दौरान हुआ। भारतीय परिस्थितिओं को जानने एवम् उसमें सुधार लाने के लिए सबके पास विचार हैं जिसमें कुछ लोग इस दिशा में कार्यरत हैं एवं कुछ समाचार पत्रों तथा पत्रिकाओं के पठन के उपरांत आपसी बहसों के बाद अपने रोजमर्रा के जीवन में लौट जाते हैं। समाज के इन दोनों ही वर्गो का अपना अपना महत्व हैं, चूँकि मैं इस समाज से अलग नहीं, अतएव दूरसंचार के क्षेत्र की अभूतपूर्व उपलब्धिओं के बीच भारतीय दूरसंचार की स्थिति

का प्रश्न मस्तिष्क में कौंधना स्वाभाविक था। भारतीय दूरसंचार उद्योग ने उदारीकरण युग के बाद एक लंबा सफर तय किया है। पिछले कुछ वर्षों में, इस उद्योग ने मुख्यतः वायरलेस की दिशा में कई गुना उन्नति की हैं। इस उन्नति के बावजूद भारतीय टेलिफोन घनत्व (Teledensity) अंतराष्ट्रीय मानको से काफी कम है। यह एक तरफ तो चिंता का विषय हैं परन्तु भविष्य में दूर संचार की दिशा में उन्नति की संभावनाओं को भी प्रकट करता है। इस उद्योग के समक्ष आने वाली कुछ ऐसी ही चुनोतियों और अवसरों को एकीकृत करने का तुच्छ प्रयास मैनें आगे किया है।

भारतीय संचार बाजार मुख्य रूप से वायरलेस क्षेत्र 13 सर्विस प्रदाताओं और 22 दूरसंचार मंडलो के साथ दुनिया का सबसे ज्यादा प्रतियोगिताशील बाजार है। जहां 6 से 8 सर्विस प्रदाता हर मंडल मे हैं। 3G लाइसेन्स और मोबाइल नम्बर पोर्टेबिलिटी (MNP) ने इस प्रतियोगिता को और अधिक तीव्र बना दिया है। अत्यधिक प्रतियोगिता और स्पैक्ट्रम के सीमित संसाधन परोक्ष रूप से मोबाइल नेटवर्क स्थापित करने हेतु पूंजी व्यय को बढ़ाती है क्योंकि सेवा की गुणवत्ता को बनाये रखने के लिए सर्विस प्रदाता अधिक से अधिक स्पैक्ट्रम की माँग करते हैं। इसने नए सर्विस प्रदाताओ के लिए भारतीय दूरसंचार बाजार में प्रवेश को चुनौतीपूर्ण बना दिया है। एक तरफ वह टावर शेयरिंग के द्वारा अतिशीघ्र नेटवर्क रोलआउट का फायदा उठा सकते हैं जबकि दूसरी तरफ उन्हें अत्यधिक उपभोक्ता अधिग्रहण मूल्य और निम्न ARPU उपभोक्ता जैसी समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है। यहा मैं बता दूँ, प्रति उपभोक्ता औसत राजस्व (ARPU) में होने वाली अत्यधिक गिरावट सर्विस ऑपरेटरों की अतिरिक्त राशि (Margin) पर नकरात्मक प्रभाव डालती हैं। अतः यह दूरसंचार ऑपरेटरों के सामने एक बड़ी चुनौती बनकर सामने आ रही है।

ग्रामीण भारत में देश की 70% से अधिक जनसंख्या निवास करती है। शहरी भारत से अगर तुलना की जाएँ, तो ग्रामीण भारत आज भी दूर संचार सेवाओं से अछूता सा लगता है। इस डिजिटल बँटवारे का अंदाजा शहरी और ग्रामीण टेलिफोन घनत्व लगभग जो कि क्रमशः 145.39 और 43.13 है, के विशाल अंतर से लगाया जा सकता है। ग्रामीण क्षेत्रों में दूरसंचार की सीमित पहुँच का मुख्य कारण दूरसंचार और अन्य अवस्थापना (Infrastructure) जैसे सड़क, बिजली में कमी को कह सकते हैं क्योंकि यह सर्विस प्रदाता के लिए प्रांरभिक निवेश को बहुत बढ़ा देती है, ग्रामीण भारत की तरफ रूझान सर्विस प्रदाताओं को विशाल उपभोक्ता आधार (Subscriber Base) तो देता हैं, अपितु यह कदम ARPU में आनुपातिक वृद्धि की गारण्टी नहीं देता। जिसका कारण ग्रामीण उपभोक्ताओं की कम आय और ग्रामीण क्षेत्रों में दूरसंचार की सीमित आवश्यकता को ठहराया जा सकता है। अतएव ग्रामीण भारत में दूरसंचार सेवा पहुँच को बढ़ाना एक बड़ी चुनौती है। दूरसंचार मंत्रालय विभिन्न सेवाओं के लिए अलग–अलग लाइसेंस देता है। आठ लाइसेंस शुल्क और स्पेक्ट्रम उपयोगिता प्रभार (Spectrum Usage Charges) में एकरूपता न होने के कारण यह नियमक प्रभार के स्वरूप को जटिल बना देती है। आपरेटरों के लिए ARPU में होने वाली लगातार कमी और अत्यधिक कम होती शुल्क–सूची (Tariff) के बीच तात्कालिक विकास दर को बनाए रखने के लिए नियमक

प्रभार की जटिलता को कम करना आवश्यक हैं। इस दिशा में यूनिफाइड लाइसेंस रिजिम एक महत्वपूर्ण कदम है।

भविष्य में ग्रामीण टेलीफोनी, 3 जी स्पेक्ट्रम, वाइमेक्स तकनीक, मोबाइल वैल्यू एडेड सर्विस (MVAS) और अवस्थापना में भागीदारी को दूरसंचार विकास कारकों के रूप में देखा जा सकता है। आज शहरी दूरसंचार बाजार मुख्य रूप से वाइस टेलीफोनी सेवा संतृप्ति सीमा तक पहुँच गया है। अतएव विभिन्न चुनौतियों के बावजूद भविष्य में दूरसंचार की विकास दर को बनाए रखने में ग्रामीण उपभोक्ता क्षेत्र सबसे अधिक क्षमता रखता है। ग्रामीण क्षेत्रों में दूरसंचार की पहुँच रोजगार और उन्नति के नए अवसर प्रदान करेगी। अतएव इन सेवाओं की उपलब्धता ग्रामीण क्षेत्रों मे सुनिश्चित करना सरकार की एक बड़ी जिम्मेदारी है। इस दिशा मे सरकारी पहल का लाभ सर्विस प्रदाताओं असंबद्ध ग्रामीण क्षेत्रों में सेवाओं को पहुँचाने में कर सकते हैं। ट्राई (TRAI) ने भी ग्रामीण दूरसंचार के प्रोत्साहन के लिए अनेक सुझाए दिए हैं, जिसमें यूएसओ फंड (USO Fund) का सही प्रयोग, बैकहॉल की स्थिति में सुधार, रेलटेल और पीजीसीआईएल की आप्टिकल फाइबर केबल (OFC) लाइन का दूरसंचार के लिए प्रयोग, स्थानीय सरकार के सहयोग से महत्वपूर्ण मसलों को निपटाना जैसे राइट ऑफ वे, बिजली शुल्क में कटौती और पावरग्रिड से समझौता प्रमुख है।

भारतीय दूरसंचार की चुनौतियों के तत्संगत समाधान हेतु अनुसंधान और विकास की महती आवश्यकता है, साथ ही इसके उचित क्रियान्वयन की दिशा में सार्थक प्रयास भी अत्यंत आवश्यक है। उचित अवसरों और लोक निजी भागीदारी (PPP) के उपयोग से डिजिटल डिविडेंड को कम किया जा सकता है। 12 वीं पंचवर्षीय योजना के मूलमंत्र अर्थात् द्रुत एवम् समावेशी विकास को पाने के लिए दूरसंचार एक महत्वपूर्ण तत्व है। अतएव वर्तमान परिदृश्य को देखते हुए यह कहना गलत नहीं होगा कि आज भारतीय दूरसंचार के विकास का सफर चुनौतीपूर्ण जरूर है परंतु सही दिशा में सही अवसरों के दोहन द्वारा यह क्षेत्र भविष्य में नये आयामों को छू सकता है। इसी उम्मीद के साथ मैं अपनी लेखनी को यहां विराम देती हूँ।

तृष्णा मण्डल
ए.डी.ई.टी.–2010 बैच
संचार भवन, दिल्ली

कहानी

प्रभु से मांगने में कोई खोट न हों

एक शहर में एक बहुत धनवान व्यक्ति था जो दिल का भी बहुत अच्छा था। तीन भिखारी एक ही समय में उसके पास भिक्षा मांगने आए। पहला भिखारी बेशर्मी के साथ धनवान व्यक्ति के पास गया और बोला, सेठ मुझे पांच रूपये दो, मैं भूखा हूँ। धनवान व्यक्ति को अजीब भी लगा और बुरा भी। उसने कहा, कमाल हो गया, तुम तो ऐसे पैसे मांग रहे हो जैसे कि मुझे तुम्हारा कर्ज देना हो। फिर भी ये दो रूपये पकड़ों और यहां से चलते नअर आओ। भिखारी ने दो रूपये सेठ के हाथ से लिए और आगे बढ़ गया।

दूसरा भिखारी सेठ के पास गया और बोला, सेठी जी, पिछले दस दिनों से अन्न का एक दाना भी मेरे पेट मे नहीं गया है। कृपया मेरी मदद करें। सेठ बोला, कितने पैसों से तुम्हारा काम चलेगा। भिखारी बोला, जो आप उचित समझें। सेठ ने सौ रूपये का नोट जेब से निकाला और भिखारी से बोला कि इसे रख लो। इससे कम से कम 3–4 दिन का काम आराम से चल जाएगा। भिखारी ने सौ रूपये का नोट लिया और वहां से निकल लिया। उसके बाद तीसरा भिखारी आया और बोला, सेठ जी आप बहुत बड़े दानी है, ये अलग बात है, लेकिन आपका व्यक्तित्व बहुत ही अच्छा है इसलिए मैं आपसे मिलने चला आया। आप जैसे व्यक्ति तो भगवान भी बनाकर आसानी से पृथ्वी पर नहीं भेजते। भिखारी की बात सुनकर सेठ गदगद् हो गया और बोला, आकर आराम से बैठ जाओं। तुम काफी थके हुए मालूम पड़ते हों। सेठ अपने नौकर से बोला, इसके लिए अच्छे भोजन का प्रबंध भी करो। भोजन ग्रहण करने के बाद सेठ बोला, अब बताओ मैं तुम्हारी क्या सेवा कर सकता हूँ।

भिखारी ने कहा, अरे सेठ जी, मैं तो आपकी प्रशंसा सुनकर मिलने चला आया। आप कितने भले आदमी है, इसका मुझे यहाँ आकर अंदाजा हुआ।

आपने वैसे ही इतना स्वादिष्ट भोजन मुझे कराया है, इसके बाद तो सच जानिए, कोई इच्छा ही नहीं रही। मैं आपके व्यवहार से बहुत प्रसन्न हूँ। भगवान आपको बहुत दें। भिखारी की बातें सुनकर सेठ को बहुत गहरे आंनद का अनुभव हुआ। सेठ ने भिखारी से प्रार्थना कि वह कहीं न जाए और यहीं रहे। उसके बाद सेठ ने एक सुन्दर सा घर बनवा दिया जिसमें भिखारी आजीवन रहा।

इस दुनिया में लोग तीन तरह से भगवान से याचना और प्रार्थना करते हैं। कुछ लोग भौतिक सुखों के लिए और मात्र अपनी इच्छाओं की पूर्ति के लिए ही याचना करते हैं और थोड़ा बहुत पा भी जाते हैं। दुसरे उस तरह के भक्त होते है जो अपनी दुखों से बाहर आने के लिए प्रयत्न करते है और भगवान उन्हें अपने दुखों से निकलने में मदद करते हैं।

तीसरे वे भक्त होतें हैं जो भगवान के अस्तित्व को तो पहचानते है लेकिन मांगने में संकोच करते हैं। ऐसी अवस्था में प्रभु जो सब जानते है, ऐसे व्यक्ति को निहाल कर देते हैं। दरअसल हमारे मांगने में ही खोट हैं।

संकलन कर्त्ता
ललन ठाकुर
सेवानिवृत एम.टी.एस., टी.ई.सी., नई दिल्ली

कविता

बेटी

बेटी बनकर आई हुँ, माँ बाप के जीवन में,
बसेरा होगा कल मेरा, किसी ओर के आँगन में,
क्यूँ ये रीत, भगवान ने बनाई होगी ?
कहते हैं आज नहीं, तो कल तू पराई होगी,
देके जन्म पाल पोसकर, जिसने हमें बड़ा किया,
और वक्त आया तो उन्हीं, हाथों ने हमें विदा किया,
टूट के बिखर जाती है, हमारी जिंदगी वहीं,
पर फिर भी उस बंधन में, प्यार मिले जरूरी तो नहीं,
क्यों रिश्ता हमारा अजीब होता है ?
क्या बस यही बेटियों का नसीब होता है।
बहुत चंचल बहुत खुशनुमान सी होती है बेटियाँ
नाजुक सा दिल रखती है, नाजुक सी होती है बेटियाँ
बात–बात पर रोती है, नादान सी होती है बेटियाँ
रहमत से भरपूर, खुदा की नहमत है बेटियाँ
घर महक उठता है, जब मुस्कुराती है बेटियाँ
अजीब सी तकलीफ होती है, जब दूसरे घर जाती है बेटियाँ,
घर लगता है सूना–सूना, कितना रूला कर जाती है बेटियाँ,
खुशी की झलक, बाबुल की लाड़ली है बेटियाँ,
ये हम नहीं कहते, ये तो भगवान कहता है कि
"जब मैं बहुत खुश होता हुँ तो जन्म लेती है,
प्यारी सी बेटियाँ"

लम्हें जिन्दगी के

जो गम देके तुमने सिखाया हमें
जिन्दगी में बहुत काम आया हमें।
जब लगी ठोकर, गिर के बैठ गये,
तब लगा पास तुमने बिठाया हमें।
गुजर जाते बरसो मगर ना समझते,
चन्द लम्हों में तुमने समझाया हमें।
है वही फिर भी, नई सी लगी,
जाने कैसे दुनिया को तुमने दिखाया हमें।
जो हुए हम परेशां, कहीं पे कभी,
आ–आ के यादों में बहुत बहलाया हमें।
कभी जब लगा रूठे बैठे हैं हम,
तो बहुत खूब तुमने मनाया हमें।
जानते थे हम भी कुछ मगर,
लगा जैसे सब तुम्हीं ने बताया हमें।

जिन्दगी

जिन्दगी एहसास भी,
जिन्दगी एक आस भी,
है साँसो का सरगम,
जिन्दगी विश्वास भी,
जिन्दगी जिंदादिली,
जिन्दगी अरमान भी,
ये एक बंद रस्ता,
जिन्दगी खिलवाड़ भी,
जिस तरह देखो इसे,
जिन्दगी वो रूप है,
जिस तरह चाहो इसे,
जिन्दगी वो रूप है,
गर्मियाँ भी यहीं,
सर्दियाँ भी यहीं,
धुंध भी मिले,
तो हैं बरसात भी,
एक सरगम है देखो,
कई मौसम छिपे,
खुद में जन्नत भी है,
जिन्दगी सौगात भी,
तमाम मजबुरी लिए,
जीते हैं हम सभी,
पर हम हँसते भी है,
खिलखिलाते भी हमी,
जिन्दगी की तमन्नाएँ,
कभी ना मरें,
जिन्दगी आगे बढ़े,
पीछे दुनिया रहे,
यही जिन्दगी की दास्तां है
ऐ जिन्दगी हम तुम्हारे,
तु हम सब की,
तुमको मेरा सलाम,
तु है रब सा।

सत्यप्रकाश
स्टाफ कार चालक
टी.ई.सी., दिल्ली

कविता

सफ़र

बहुत लम्बा सफर था,
बड़े अरमान से चलना शुरू किया
कितने अनजान लोग मिले, कुछ चेहरे जाने पहचाने हो गए
पता न चला कि लोग इतने कम समय में कैसे इतने नजदीक आ गए।
चलते–चलते मौसम के रूप बदलते गए
कभी तेज धूप, कभी छांव, कभी सूरज का उजाला, कभी चांदनी की रोशनी,
कभी घना अंधेरा।
अकेले ही चलना शुरू किया था, लेकिन लोग मिलते गए।
जल्द ही एक अपनापन, एक प्यारा सा बंधन मिल गया
चलते चलते देखीं सुहानी रातें, रात ढलते आया सुनहरा सबेरा,
तेज धूप हुए तो हर चेहरा साफ नजर आने लगा।
रिश्ते जुड़ते गए, बड़े चाहत से, बड़े आरमान से
खून के रिश्ते, धर्म के रिश्ते, जुबान के रिश्ते, दिल के रिश्ते,
इतने गहरे, इतने मजबुत हो गए
कि कभी न सोचा कि संसार की कोई भी ताकत कभी इसे तोड़ सकती है।
लेकिन क्या मालुम था
कि संसार के हर बंधन इतने कच्चे होते है
कि सांस लेने की आवाज से भी बिखर जाए
लम्बे सफर में गाड़ी पटरी पे चलती गयी
और कभी कभी जाके स्टेशन पर रूकती रही
कुछ लोग उतर गए, कुछ लोग ट्रेन में आके बैठे –
गाड़ी चलती गयी।
खिड़की से बाहर झांककर देखा तो महसूस हुआ
खुबसूरत इस दुनिया के हर रूप हर रंग में कितना जादू
कैसे ये धरती लोगों को अपने आंचल में लपेटे हुए है
कैसे बरसों से उनकी किस्मत जगमगाती रहती है।
फिर कभी महसुस किया जिदंगी का रूखापन
कहां से कानों में गुंजती है लोगों की रोने की आवाज,
कहां से दिखते है भुखे, नंगे शरीर का दर्द
क्यों कहीं है शमशान घाट का सन्नाटा।।
गाड़ी चलती गयी,
आखरी मंजिल आनी वाली है, बहुत जल्दी बहुत हिसाब मिटाना है
दूर कोहरे में छाया स्टेशन नजर आया, उतरना है कुछ ही समय में
सबको सलाम देना है, विदा लेना है, न जाने फिर मिले न मिले।
बहुत सुहाना सफर रहा, बड़ी उम्मीद से यात्रा शुरू की थी
चलते–चलते नजरिया बदलता गया
जिस घटना ने गमगीन किया, उसी की याद में खुद पे हंसी आयी
जिस घटना ने खुद को हंसना सिखाया, उसी की याद में रोना आया।
हसीन यादें, गम के साये, टुटे हुए सपने साथ लिए
लोगो से बिछड़ते हुए, उतरना है मंजिल पे,
दूर बहुत दूर धूंधली सी मंजिल नजर आने लगी है।।
पता नहीं इसके बाद कहाँ से शुरू होगा सफर,
न जाने ओर कितने लोग नजदीक आएंगे,
बनेगें कितने रिश्ते, होगा कितना तजुरबा।
उम्मीद पे टिकी हुयी दुनियाँ
अरमान है कि अगला सफर भी सुहाना होगा,
दिल में नई दिशा की रंगीन सपनों की चाहत लिए
फिर शुरू होगी नये रास्ते की खोज, शुरू होगी नयी मंजिल की तलाश।।

शम्पा साहा
निदेशक, पूर्वी क्षेत्र
कोलकाता, टी.ई.सी.

विवेचना संकलन

हिन्दू धर्म व दर्शन

धर्म वास्तव में संस्कृत के शब्द धृ–धातु से लिया गया है। धृ जिसका अर्थ है ''धारण करना'' धार्यते इति धर्मम् अर्थात् किसी एक या अधिक पारलौकिक शक्ति में विश्वास और उसके साथ जुड़ी रीति, रिवाज, परम्परा, पूजा–पद्धति और दर्शन का समायोजन है। जीवन में हम जो धारण करते है वही धर्म है। इसमें नैतिक मूल्यों का आचरण भी समाहित है। मूल रूप में धर्म वह पवित्र अनुष्ठान है जिसमे चेतना का शुद्धिकरण होता है।

हिन्दू धर्मः

हिन्दुओं में इस धर्म को सनातन धर्म अथवा वैदिक धर्म भी कहते हैं। इण्डोनेशिया में इस धर्म का औपचारिक नाम ''हिन्दू आगम'' है। हिन्दू केवल एक धर्म या सम्प्रदाय ही नहीं है अपितु जीवन जीने की एक पद्धति है ''हिंसायाम दूयते या सा हिन्दु'' अर्थात् जो अपने मन, वचन व कर्म से हिंसा से दूर रहे वह हिन्दू है और जो कर्म अपने हितों के लिए दूसरो को कष्ट दे वह हिंसा है।

हिन्दू धर्म (संस्कृतः सनातन धर्म) विश्व के सभी धर्मों में सबसे पुराना धर्म है। ये वेदों पर आधारित धर्म है, जो अपने अन्दर कई अलग अलग उपासना, पद्धतियाँ, मतान्तर, सम्प्रदाय, और दर्शन समेटे हुए है। अनुयायियों की संख्या के आधार पर ये विश्व का तीसरा सबसे बड़ा धर्म है, संख्या के आधार पर इसके अधिकतर उपासक भारत में है और प्रतिशत के आधार पर नेपाल में है। हालाँकि इसमें कई देवी–देवताओं की पूजा की जाती है, लेकिन वास्तव में यह एकेश्वरवादी धर्म है।

नेपाल विश्व का एक मात्र आधुनिक हिन्दू राष्ट्र था लेकिन नेपाल के लोकतान्त्रिक आंदोलन के पश्चात् के अंतरिम संविधान में किसी भी धर्म को राष्ट्र धर्म अभी तक घोषित नहीं किया गया है।

इतिहासः

हिन्दू धर्म हजारों साल पुराना हैं। भारत (और आधुनिक पाकिस्तानी क्षेत्र) की सिन्धु घाटी सभ्यता में हिन्दू धर्म के कई चिन्ह मिलते हैं। इनमें एक अज्ञात मातृदेवी की मूर्तियाँ, शिवपशुपति जैसे देवता की मुद्राएँ, लिंग, पीपल की पूजा, इत्यादि प्रमुख हैं। इतिहासकारों के एक मत के अनुसार, इस सभ्यता के अन्त के दौरान मध्य एशिया से एक अन्य जाति का आगमन हुआ, जो स्वयं को आर्य कहते थे, एक अन्य मत के अनुसार, सिन्धु घाटी सभ्यता के लोग स्वयं ही आर्य थे और उनका मूलस्थान भारत ही था।

आर्यो की सभ्यता को वैदिक सभ्यता कहते है। पहले दृष्टिकोण के अनुसार लगभग 1700 ईसा पूर्व में आर्य अफगानिस्तान, कश्मीर, पंजाब और हरियाणा में बस गये। तभी से वो लोग (उनके विद्वान ऋषि) अपने देवताओं को प्रसन्न करने के लिए त्रृचाए लिखी गयी थी। पहले चार वेद रचे गये, जिनमें ऋग्वेद प्रथम था। उसके बाद उपनिषद जैसे ग्रन्थ रचे गये थे। हिन्दू मान्यता के अनुसार वेद, उपनिषद आदि ग्रन्थ अनादि, नित्य हैं, ईश्वर की कृपा से अलग–अलग मन्त्रदृष्टा ऋषियों को अलग–अलग ग्रन्थों का ज्ञान प्राप्त हुआ जिन्होंनें फिर उन्हें लिपिबद्ध किया था। दूसरे दृष्टिकोण के अनुसार हिन्दू धर्म का मूल कदाचित सिन्धु सरस्वती परम्परा (जिसका स्रोत मेहरगढ़ की 6500 ईपू संस्कृति में मिलता है) से भी पहले की भारतीय परम्परा

में है।

भारतवर्ष को प्राचीन ऋषियों ने ''हिन्दुस्थान'' का नाम दिया था जिसका अपभ्रंश ''हिन्दुस्तान'' है। ''बृहस्पति आगम'' के अनुसार :

हिमालयात् समारभ्य यावत् इन्दु सरोवरम्। तं देवनिर्मितं देशं हिन्दुस्थानं प्रचक्षते।।

अर्थात, हिमालय से प्रारम्भ होकर इन्द्र सरोवर (हिन्द महासागर) तक यह देव निर्मित देश हिन्दुस्थान कहलाता है।

''हिन्दू'', शब्द ''सिन्धु'' से बना माना जाता है। संस्कृत में सिन्धु शब्द के दो मुख्य अर्थ हैं – पहला, सिन्धु नदी जो मानसरोवर के पास से निकल कर लद्दाख और पाकिस्तान से बहती हुई समुद्र में मिलती है, दूसरा, कोई समुद्र या जलराशि के विषय में हमें ऋग्वेद की नदी स्तुति में सात नदियों की जानकारी मिलती है वे इस प्रकार हैः– सिन्धु, सरस्वती, वितस्ता (झेलम), शुतुद्रि (सतलुज), विपाशा (व्यास), परूषिणी (रावी) और अस्किनी (चेनाब)। एक अन्य विचार के अनुसार हिमालय के प्रथम अक्षर ''हि'' एवं इन्दु का अन्तिम अक्षर ''न्दु'', इन दोनो अक्षरों को मिलाकर शब्द बना ''हिन्दु'' और यह भूभाग हिन्दुस्थान कहलाया। हिन्दू शब्द उस समय धर्म की जगह राष्ट्रीयता के रूप में प्रयुक्त होता था। चूँकि उस समय भारत में केवल वैदिक धर्म को ही मानने वाले लोग थे, बल्कि तब तक अन्य किसी धर्म का उदय नहीं हुआ था इसलिये ''हिन्दू'' शब्द सभी भारतीयों के लिये प्रयुक्त होता था। भारत में केवल वैदिक धर्मावलम्बियों (हिन्दुओं) के बसने के कारण कालान्तर में विदेशियों ने इस शब्द को धर्म के सन्दर्भ में प्रयोग करना शुरू कर दिया।

आम तौर पर हिन्दू शब्द को अनेक विश्लेषको द्वारा विदेशियों द्वारा दिया गया शब्द माना जाता है। इस धारणा के अनुसार हिन्दू एक फ़ारसी शब्द है। हिन्दू धर्म को सनातन धर्म या वैदिक धर्म भी कहा जाता है ऋग्वेद में सप्त सिन्धु का उल्लेख मिलता है – वो भूमि जहाँ आर्य सबसे पहले बसे थे। भाषाविदों के अनुसार हिन्द आर्य भाषाओं की ''स्'' ध्वनि (संस्कृत का व्यंजन ''स्'') ईरानी भाषाओं की ''ह्'' ध्वनि में बदल जाती है। इसलिये सप्त सिन्धु अवेस्तन भाषा (पारसियों की धर्मभाषा) मे जाकर हफ्त हिन्दु में परिवर्तित हो गया (अवेस्ताः वेन्दीदाद, फ़र्गर्द 1.18)। इसके बाद ईरानियों ने सिन्धु नदी के पूर्व में रहने वालों को हिन्दु नाम दिया। जब अरब से हमलावर भारत में आए, तो उन्होनें भारत के मूल धर्मावलम्बियों को हिन्दू कहना शुरू कर दिया।

इन दोनों सिद्धान्तों में से पहले प्राचीन काल में नामकरण को इस आधार पर सही माना जा सकता है कि ''बृहस्पति आगम'' सहित अन्य आगम, ईरानी या अरबी सभ्यताओं से बहुत प्राचीन काल में लिखा जा चुके थे। अतः उसमें ''हिन्दुस्थान'' का उल्लेख होने से स्पष्ट है कि हिन्दू (या हिन्दुस्थान) नाम प्राचीन ऋषियों द्वारा दिया गया था न कि अरबों/ईरानियों द्वारा। यह नाम बाद में अरबों/ईरानियों द्वारा प्रयुक्त होने लगा।

मुख्य सिद्धान्त विशेष :

हिन्दू धर्म कोई सिद्धान्तों का समूह नहीं है जिसे सभी हिन्दुओं को मानना जरूरी है। ये तो धर्म से ज्यादा एक जीवन का मार्ग है। हिन्दुओं का कोई केन्द्रीय धर्मसंगठन नहीं है। इसके अन्तर्गत कई मत और सम्प्रदाय आते हैं, और सभी को बराबर श्रद्धा दी जाती है। धर्मग्रन्थ भी कई हैं। फिर भी, वो मुख्य सिद्धान्त, जो ज्यादातर हिन्दू मानते है, इस प्रकार हैं :–

(i) धर्म (वैश्विक कानून) में विश्वास

(ii) कर्म एवं उसके फल (पूर्वजन्म व वर्तमान) में विश्वास

(iii) पूर्नजन्म का सांसारिक चक्र

(iv) मोक्ष जिसमे सांसरिक बन्धनो से मुक्ति

(v) यान योग और अन्ततः

(vi) ईश्वर की भक्ति।

हिन्दू धर्म के अनुसार संसार के सभी प्राणियों में आत्मा होती है। मनुष्य ही ऐसा प्राणी है जो इस लोक मे पाप और पुण्य, दोनो कर्म भोग सकता है और मोक्ष प्राप्त कर सकता है। हिन्दू धर्म में चार मुख्य सम्प्रदाय है : वैष्णव (जो विष्णु को परमेश्वर मानते है), शैव (जो शिव को परमेश्वर मानते हैं) शक्ति (जो देवी को परमशक्ति मानते हैं) और स्मार्त (जो परमेश्वर के विभिन्न रूपों को एक ही समान मानते हैं) लेकिन वर्तमान में ज्यादातर हिन्दू स्वयं को किसी भी सम्प्रदाय में वर्गीकृत नहीं करते है।

संक्षेप में, हिन्दुत्व के प्रमुख तत्व निम्नलिखित है –

हिन्दू धर्म गोषु भक्तिर्भवेद्यस्य प्रणवे च दृढा मतिः। पुनर्जन्मनि विश्वासः स वै हिन्दुरिति स्मृतः॥

अर्थात् गोमाता में जिसकी भक्ति हो, प्रणव जिसका पूज्य मन्त्र हो, पुनर्जन्म में जिसका विश्वास हो, वह हिन्दू है। मेरूतन्त्र 33 प्रकरण के अनुसार 'हीनं दूषयति स हिन्दु' अर्थात् जो हीन (हीनता या नीचता) को दूषित समझता है (उसका त्याग करता है) वह हिन्दु है। लोकमान्य तिलक के अनुसार असिन्धोः सिन्धुपर्यन्ता यस्य भारतभूमिका। पितृभूः पुण्यभूश्रैव स वै हिन्दुरिति स्मृतः। अर्थात् – सिन्धु नदी के उद्म स्थान से लेकर सिन्धु (हिन्द महासागर) तक सम्पूर्ण भारत भूमि जिसकी पितृभू (अथवा मातृ भूमि) तथा पुण्यभू (पवित्र भूमि) है, (और उसका धर्म हिन्दुत्व है) वह हिन्दु कहलाता है। हिन्दु शब्द मूलतः फारसी है इसका अर्थ उन भारतीयों से है जो भारतवर्ष के प्राचीन ग्रन्थों, वेदों, पुराणों में वर्णित भारतवर्ष की सीमा के मूल एवं पैदायसी प्राचीन निवासी हैं। कालिका पुराण, मेदनी कोष आदि के आधार पर वर्तमान हिन्दू कानून के मूलभूत आधारों के अनुसार वेदप्रतिपादित रीति से वैदिक धर्म में विश्वास रखने वाला हिन्दू है। यद्यपि कुछ लोग कई संस्कृति के मिश्रित रूप को ही भारतीय संस्कृति मानते है, जबकि ऐसा नही है। जिस संस्कृति या धर्म की उत्पत्ति एवं विकास भारत भूमि पर नही हुआ है, वह धर्म या संस्कृति भारतीय (हिन्दू) कैसे हो सकती है ?

हिन्दु धर्म के कुछ मुख्य लक्षण :-

1. ईश्वर एक, नाम अनेक है।
2. ब्रह्म या परम तत्व सर्वव्यापी है।
3. ईश्वर से डरें नही, प्रेम करें और प्रेरणा लें।
4. हिन्दुत्व का लक्ष्य स्वर्ग–नरक से ऊपर हैं।
6. धर्म की रक्षा के लिए, ईश्वर बार–बार पैदा होता हैं।
7. परेपकार पुण्य है, दूसरों को कष्ट देना पाप है।
8. जीवमात्र की सेवा ही परमात्मा की सेवा है।

9. स्त्री आदरणीय है।
10. सती का अर्थ पति के प्रति सत्यनिष्ठा है।
11. हिन्दुत्व का वास हिन्दू के मन, संस्कार और परम्पराओं में निहित है।
12. पर्यावरण की रक्षा को उच्च प्राथमिकता दी गयी है।
13. हिन्दू दृष्टि समतावादी एवं समन्वयवादी।
14. आत्मा अजर अमर है।
15. सबसे मुख्य मंत्र गायत्री मंत्र है।
16. हिन्दुओं के पर्व और त्योहार खुशियों से जुड़े है
17. हिन्दुत्व का लक्ष्य पुरूषार्थ है और मध्य मार्ग को सर्वोत्तम माना गया है
18. हिन्दुत्व एकत्व का दर्शन है
19. हिन्दु एक शुद्ध पवित्र, पापों कुकर्मो से डरने वाली मनुष्य जाति है।
20. हिन्दुओं में प्रभु के प्रति पूर्ण आस्था होती है।

ब्रह्म :

हिन्दू धर्मग्रन्थ उपनिषदों के अनुसार ब्रह्म ही परम तत्व है। (इसे त्रिमूर्ति के देवता ब्रह्मा से भ्रमित न करें) वो ही जगत का सार है, जगत की आत्मा है। वो विश्व का आधार है। उसी से विश्व की उत्पत्ति होती है और विश्व नष्ट होने पर उसी मे विलीन हो जाता है। बह्मा एक, और सिर्फ एक ही है। वो विश्वातीत भी है और विश्व के परे भी। वही परम सत्य, सर्वशक्तिमान और सर्वज्ञ है। वो कालातीत, नित्य और शाश्वत है। वही परम ज्ञान है। ब्रह्म के दो रूप है : परब्रह्म और अपरब्रह्म। परब्रह्म असीम, अनन्त और रूप–शरीर विहीन है। वो सभी गुणों से भी परे है, पर उसमें अनन्त सत्य, अनत चित् और अनन्त आनन्द है। ब्रह्म की पूजा नही की जाती है, क्योंकि वो पूजा से परे और अनिर्वचनीय है। उसका ध्यान किया जाता है। प्रणव या ऊँ (ओम्) ब्रह्मवाक्य है, जिसे सभी हिन्दू परम पवित्र शब्द मानते हैं। हिन्दू यह मानते है कि ओउम् की ध्वनि पूरे ब्रहमाण्ड मे गून्ज रही है। ध्यान में गहरे उतरने पर यह सुनाई देती है। ब्रह्म की परिकल्पना, वेदान्त दर्शन का केन्द्रीय स्तम्भ है, और हिन्दू धर्म की विश्व को अनुपम देन है।

ईश्वरः

ब्रह्म और ईश्वर में क्या सम्बन्ध है, इसमें हिन्दू दर्शनों की सोच अलग अलग है। अद्वैत वेदान्त के अनुसार जब मानव ब्रह्म को अपने मन से जानने की कोशिश करता है, तब ब्रह्म ईश्वर हो जाता है, क्योंकि मानव माया नाम की एक जादुई शक्ति के वश मे रहता है। अर्थात् जब माया के आइने में ब्रह्म की छाया पड़ती है, तो ब्रह्म का प्रतिबिम्ब हमें ईश्वर के रूप मे दिखायी पड़ता है। ईश्वर अपनी इसी जादुई शक्ति ''माया'' से विश्व की सृष्टि करता है और उस पर शासन करता है। हालाँकि ईश्वर एक नकारात्मक शक्ति के साथ है, लेकिन माया उस पर अपना कुप्रभाव नहीं डाल पाती है, जैसे एक जादूगर अपने ही जादू से अचंम्भित नहीं होता है। माया ईश्वर की दासी है, परन्तु हम जीवों की स्वामिनी है। वैसे तो ईश्वर रूपहीन व निराकार है, पर माया की वजह से वो हमें कई देवताओं के रूप में प्रतीत हो सकता है। इसके विपरीत वैष्णव मतों और दर्शनों में माना जाता है कि ईश्वर और ब्रह्म में कोई फर्क नही है और विष्णु (या कृष्ण) ही ईश्वर हैं। न्याय, वैशेविक और योग दर्शनों के

अनुसार ईश्वर एक परम और सर्वोच्च आत्मा है, जो चैतन्य से युक्त है और विश्व का सृष्टीकारक, विनाशकारक भी है।

जो भी हो, बाकी बातें सभी हिन्दू मानते हैं : ईश्वर एक, और केवल एक है। वो विश्व्यापी और विश्वातीत दोनो है। ईश्वर सगुण है। वो स्वयंभू और विश्व का कारण (सृष्टा) है। वो पूजा और उपासना का विषय है। वो पूर्ण, अनन्त, सनातन, सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान और सर्वव्यापी है। वो राग–द्वेष से परे है, पर अपने भक्तों से प्रेम करता है और उन पर कृपा करता है। उसकी इच्छा के बिना इस दुनिया में एक पत्ता भी नही हिल सकता। वो विश्व की नैतिक व्यवस्था को कायम रखता है और जीवों को उनके कर्मो के अनुसार सुख–दुख प्रदान करता है। श्रीमद्भगवतगीता के अनुसार विश्व में नैतिक पतन होने पर वो समय–समय पर धरती पर अवतार (जैसे कृष्ण) रूप लेकर आता है। वह समाज व सृष्टि का उद्धार करता है।

प्रकृतिः

हिन्दू धर्म में नीम, बेल, तुलसी, बरगद, पीपल, आंवला, आम सभी वृक्षों एवं पौधों को पूजा अर्चना के साथ जोड़ा गया है। ये वृक्ष औषधियों के निर्माण एवं पर्यावरण की रक्षा करने में अत्यधिक महत्व रखते हैं। वस्तुतः हिन्दुत्व में प्रकृति के साथ तादात्म्य स्थापित करने की चेष्टा की गयी है। सम्पूर्ण प्रकृति ही ईश्वर का शरीर है। इस प्रकार सूर्य, चन्द्रमा, वायु अग्नि, जल, पृथ्वी, नदी आदि को देवत्व प्रदान कर उनकी पूजा की जाती है।

देवी और देवताः

हिन्दू धर्म में कई देवता है, ये देवता कौन हैं, इस बारे में तीन मत हो सकते है।

- अद्वैत वेदान्त, भगवद् गीता, वेद, उपनिषद्, आदि के मुताबिक सभी देवी–देवता एक ही परमेश्वर के विभिन्न रूप हैं (ईश्वर स्वयं ही ब्रह्म का रूप है) । निराकार परमेश्वर की भक्ति करने के लिए भक्त अपने मन में भगवान को किसी प्रिय रूप में देखता है। ऋग्वेद के अनुसार, ''एक संत विप्रा बहुधा वदन्ति'', अर्थात् एक ही परमसत्य को विद्वान कई नामों से बुलाते हैं।
- योग, न्याय, वैशेषिक, अधिकांश शैव और वैष्णव मतों के अनुसार देवगण वो पारलौकिक शक्तियां है जो ईश्वर के अधीन है मगर मानवों के भीतर मन पर शासन करती है। योग दर्शन के अनुसार ईश्वर ही प्रजापति और इन्द्र जैसे देवताओं और अंगीरा़ जैसे ऋ़षियों के पिता और गुरू हैं।
- मीमांसा के अनुसार सभी देव–देवता स्वतन्त्र सत्ता रखते हैं, और उनके उपर कोई एक ईश्वर नहीं है। इच्छित कर्म करने के लिये इनमें से एक या कई देवताओं को कर्मकाण्ड और पूजा द्वारा प्रसन्न करना ज रू री है। इस प्रकार का मत शुद्ध रूप से बहु–ईश्वरवादी कहा जा सकता है।

एक बात और कही जा सकती है कि ज्यादतार वैष्णव और शैव दर्शन पहले दो विचारों को सम्मिलित रूप से मानते हैं। जैसे, कृष्ण को परमेश्वर माना जाता है जिनके आधीन बाकी देवी–देवता हैं, और साथ ही साथ, सभी देवी–देवताओं को कृष्ण का ही रूप माना जाता है। तीसरे मत को धर्मग्रन्थ मान्यता नहीं देते।

जो भी सोच हो, ये देवता रंग–बिरंगी हिन्दू संस्कृति के अभिन्न अंग है। वैदिक काल के मुख्य देव थे– इन्द्र, अग्नि, सोम, वरूण, रूद्र, विष्णु, प्रजापति, सविता (पुरूष देव) और देवियाँ सरस्वती, ऊषा, पृथ्वी, इत्यादि (कुल

33)। बाद के हिन्दू धर्म में नये देवी देवता आये (कई अवतार के रूप में) गणेश, राम, कृष्ण, हनुमान, कार्तिकेय, सूर्य–चन्द्र, और ग्रह और देवियाँ (जिनकी माता की उपाधि दी जाती है) जैसे – दुर्गा, पार्वती, लक्ष्मी, शीतला, सीता, राधा, सन्तोषी, काली, इत्यादि। ये सभी देवता पुराणों मे उल्लिखित हैं, और उनकी कुल संख्या 33 करोड़ बतायी जाती है। पुराणों के अनुसा ब्रह्म, विष्णु और शिव साधारण देव नहीं, बल्कि महादेव है और त्रिमूर्ति के सदस्य है। इन सबके अलावा हिन्दु धर्म में गाय को भी माता के रूप में पूजा जाता है। यह माना जाता है कि गाय में सम्पूर्ण 33 करोड़ देवी देवता वास करते हैं।

हिंदू धर्म के पांच प्रमुख देवता निम्न प्रकार वर्णित है :–
हिंदू धर्म मान्यताओं मे पांच प्रमुख देवता पूजनीय है। ये ईश्वर के ही अलग–अलग रूप और शक्तियां हैं।

- सूर्य – स्वास्थ्य, प्रतिष्ठा व सफलता।
- विष्णु – शांति व वैभव।
- शिव – ज्ञान व विद्या।
- शक्ति – शक्ति व सुरक्षा (माँ भवानी)
- गणेश – बुद्धि व विवेक।

धर्मग्रन्थ :

हिंदू धर्म के पवित्र ग्रन्थों को दो भागो में बाँटा गया है – श्रुति और स्मृति। श्रुति हिन्दू धर्म के सर्वोच्च ग्रन्थ हैं, जो पूर्णतः अपरिवर्तनीय हैं, अर्थात् किसी भी युग में इनमे कोई बदलाव नही किया जा सकता। स्मृति ग्रन्थों मे देश कालानुसार बदलाव हो सकता है। श्रुति के अन्तर्गत चारो वेदः ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद और अथर्ववेद् ब्रह्म सूत्र व उपनिषद् आते हैं। वेद श्रुति इसलिये कहे जाते है क्योंकि हिन्दुओं का मानना है कि इन वेदों को परमात्मा ने ऋषियों को सुनाया था, जब वे गहरे ध्यान में थे। वेदों को श्रवण परम्परा के अनुसार गुरू द्वारा शिष्यों को दिया जाता था। हर वेद मे चार भाग है (1) संहिता, मन्त्र भाग, (2) ब्राह्मण ग्रन्थ, गद्य भाग, जिसमें कर्मकाण्ड समझाये गये हैं, (3) आरण्यक। इनमें अन्य गूढ बातें समझायी गयी हैं, (4) उपनिषद्, इनमें ब्रह्म, आत्मा और इनके सम्बन्ध के बारे में विवेचना की गयी है। अगर श्रुति और स्मृति में कोई विवाद होता है तो श्रुति ही मान्य होगी। श्रुति को छोड़कर अन्य सभी हिन्दू धर्मग्रन्थ स्मृति कहे जाते है, क्योंकि इनमे वो कहानियाँ हैं जिनकी लोगो ने पीढ़ी दर पीढ़ी याद किया और बाद में लिखा। सभी समृति ग्रन्थ वेदों की प्रशंसा करते हैं। पढ़ना ज्यादा आसान हैं और अधिकाशं हिन्दुओं द्वारा पढ़े जाते हैं। प्रमुख स्मृतिगन्थ हैंः– रामायण और महाभारत, भगवद गीता, पुराण (18), मनुस्मृति, धर्मशास्त्र और धर्मसूत्र, आगम शास्त्र। भारतीय दर्शन के 6 प्रमुख अंग हैं – साँख्य, योग, न्याय, वैशेषिक, मीमांसा और वेदान्त।

अवतार :

वैष्णव धर्मावलंबी और अधिकतर हिंदू विष्णु भगवान विष्णु के 24 अवतार मानते हैं – प्रमुख निम्न है मत्स्य, कूर्म, वराह, वामन, नरसिंह, परशुराम, राम, कृष्ण, बुद्ध और कल्कि।
वस्तुतः समस्त धर्मो के अध्ययन के उपरांत यह बात स्पष्ट होती है कि व्यक्ति या व्यक्तियों के समूह द्वारा धर्म का निर्माण किया गया या अवधारण या धारण किया गया न कि धर्म ने व्यक्ति को जन्म दिया। धर्म के उदय में

क्षेत्रीय, भूगोलीय, वातावरण या पर्यावरण व जीवन उपयोगी वस्तुओं व सुविधा को ध्यान में रखते हुए विकास होता है। जब धर्मों में कुरीतियाँ या अन्य समस्याएं होती है तो अन्य तात्कालिक कारणो के परिणाम स्वरूप नये धर्मो का विकास होता है। धर्म का धारण शक्ति से, स्वेच्छा से या अन्य कारणों से धारण किया जाता है। मूल सूत्र रूप में हिन्दू दर्शन में भगवान का अर्थ इस प्रकार लिया जा सकता है।

भ = भूमि = earth

ग = गगन = sky

व = वायु = air

अ = अग्नि = fire

न = नीर = water

अतः हिन्दुत्व एक जीवन दर्शन है जो धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष को परम लक्ष्य मानकर व्यक्ति या समाज को नैतिक, भौतिक, मानसिक एवं आध्यात्मिक उन्नति के अवसर प्रदान करता है।

उपरोक्त संदर्भित अध्ययन से हम हिन्दू धर्म के रूप को कुछ सीमा तक ही समझ सकते है। हिन्दू धर्म को समस्त अर्थों में समझने के लिए हमें बहुत बृहद एवं विस्तृत अध्ययन की आवश्यकता होगी।

अतः अब हम अपने विचारो को यहा विराम देते हुए यह निष्कर्ष दे सकते है जोकि हिन्दू धर्म का मूल मन्त्र है:–

अयं निजः परो वेति गणना लघुचेतसाम्।
उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्॥

अर्थात् यह अपना है या यह पराया है, यह विचार छोटे मन वालो का है। उदार चरित्र वालो के लिए तो सारी पृथ्वी ही कुटुम्ब है।

उपरोक्त मूल सूत्र से तथा ऊपर वर्णित सभी विचारों से यह बात निकल कर आती है कि राष्ट्र प्रथम स्थान पर होता है तथा हमें अनेकता में एकता स्थापित करने का सन्देश भी प्राप्त होता है।

जय हिन्द !!

नरेन्द्र चौबे
सहायक महा निदेशक (नेटवर्क)

कविता

"वो"

जो सब की कश्ती का हमको खेवैय्या लगता है,
यशोदा माँ को तो बस वो कन्हैया लगता है।
चुराया राधा का और रूक्मिणी का दिल जिसने,
वो गोपियों को तो माखन चुरैय्या लगता है।
कबीर, तुलसी औ सदना गए थे रम जिसमें,
वो मीरा को तो सलोना सा सैय्याँ लगता है।
जो रासलीला में नाचा था गोपियों के संग,
नचाने वाला जहाँ को, नचैय्या लगता है।
दिया था गीता का अर्जुन को दर्स जिसने कभी,
वो रथ में बैठ के रथ का चलैय्या लगता है।
जो सूरदास के मन का था छोटा सा बच्चा,
वो चक्रधर, हमें सब का बचैय्या लगता है।
बचाई लाज थी जिसने सभा में द्रोपदी की,
वो मोरपंखी, वो बन्सी बजैय्या लगता है।
वो जिसकी पा ना सका थाह आज तक कोई,
बसा दिलों में वो दिल का लगैय्या लगता है।
अता जो करता है सब को हजारहा नेमत,
हमें तो सिर्फ वो दाऊ का भैय्या लगता है।
की जिसने दूर गरीबी सुदामा की, हमको,
वो हरने वाला दुखों का हरैय्या लगता है।
उठा के ले जो चला पैरहन था गोपियों के,
वो दिल्लगी से भरा मनचलैय्या लगता है।
नचाए नाच जो उंगली पे सारी दुनियाँ को,
वो खुद भी एक अजब ताता–थैय्या लगता है।
चढ़ाया एक भी पैसा जो तूने दिल से उसे,
उसे वो पैसा भी तेरा, रूपैय्या लगता है।
वो टेढ़ा हो या कि सीधा हो, जैसा हो 'साहिल',
लुभावना सा वो सब को लुभैय्या लगता है।

"कौन है"

मित्र, भाई, सुहद और सखा कौन है ?
दुःख में आकर जो करता कृपा कौन है ?
जन्मे जिनके यहाँ गर वो माँ–बाप हैं,
सृष्टि का जन्मदाता, पिता कौन है ?
जिसके संकेत पर है, प्रलय और सृजन,
सारे ब्रह्माण्ड को थामता कौन है ?
पार्थ का ही अगर उसने हाकाँ था रथ,
सारी सृष्टि का रथ हाँकता कौन है ?
दुःख हरता है जो, भरता है झोलियाँ,
सुख वैभव हमें बाटँता कौन है ?
जब गलत काम हम कोई करने लगें,
आके चुपके से फिर डाँटता कौन है ?
पेड़ हमने लगाए सिचाँई भी की,
फूल, फल उनमें फिर टाँकता कौन है ?
क्या उचित हैं किए, क्या–क्या अनुचित किए,
काम हमने, उन्हें जाँचता कौन है ?
नाव जीवन की जब भी भँवर में फँसे,
ला किनारे उसे डालता कौन है ?
जिसका आदि नहीं न कहीं अन्त है,
उसको उसके सिवा जानता कौन है ?
जब सहारा न दुनियाँ में कोई बचे,
आके उगंली पकड़ थामता कौन है ?
और साहिल नहीं कोई बस वो ही है?
सिवा उसके हमें जानता कौन है ?

रामचन्द्र वर्मा 'साहिल'
पूर्व सहायक महानिदेशक

संत-वाणी

मातरः सर्वभूतानां गावः सर्वसुखप्रदाः

गवां हि तीर्थे बसतीह गंड्डा पुष्टिस्तथा तद्रजसि प्रवृद्धा ।
लक्ष्मीः करीषे प्रपाती च धर्मस्तासां प्रणामं सततं च कुर्यात ।।

गौमाता का जहाँ निवास होता है वहाँ .....

- यमदूत नहीं आते।
- भूत प्रेत नहीं आते।
- प्रदूषण दूर होता है।
- वास्तु दोष नहीं लगता।
- दिव्य शक्ति मिलती है।
- अकाल मृत्यु नहीं होती।
- वायुमंडल पवित्र होता है।
- सभी नक्षत्र सुफल होते हैं।
- सभी ग्रह अनुकूल होते हैं।
- सकारात्मक विचार आते हैं।
- सूर्यग्रहण का असर नहीं होता।
- चन्द्रग्रहण का असर नहीं होता।
- वायरल इन्फेक्शन नहीं होता।

''बेटियाँ''

पूजनीय हैं जो, धरा पर आज वो ही मिट रहीं।
ईर्ष्या और द्वेष में आज वो पिस रहीं।।

मौन रहकर जोर से, सब कर रहा प्रहार है।
हृदय से क्यूँ प्रेम और न मर्म की रासधार है।।

बेटियों से नीत धरा को, एक नया उपकार दो।
ये धर्म मर्यादा चलाती, और चलाती संसार को।।

नित्य श्रृद्धा हृदय से, प्रेम इनको करते रहो।
इस अधर्म संसार को, प्रेम से भरते रहो।

बेटियाँ ही होती हैं, शोभा हर स्थान की।
कार्य सारे पूर्ण होते, उपस्थिति जहाँ नारी की।।

बेटियाँ ही रूप देतीं, इस अधर्म संसार को।
स्वर्ग हो जाता वहाँ, जहाँ स्त्री सम्मान हो।।

बेटियों के प्रति फिर, रहता नहीं, क्यों शुद्ध व्यवहार है।
सबके प्रति है प्रेम इनका, इनके लिए क्यों अभाव है।।

करूणा निवेदन आप सबसे, इनको ऊँचा स्थान दो।
समझ पाओ नारी को तुम, परम ब्रह्मा के पास हो।।

श्रीमती ऊषा कुमारी
दूरसंचार सुपरवाइजर
वित्त विभाग, टी.ई.सी.

कविता

नया सवेरा

उम्मीदों का दामन थामे,
कलियों सी मुस्कान लिये,
खट्टी–मीठी यादों को जोड़े
नया सवेरा फिर आया है।

हर दिल के दरवाजे पर
दस्तख देते आया है,
कलियों सा खिलने को आतुर
नया सवेरा फिर आया है।

आओं ऐसा संकल्प करें
कलियों को फूल बनायेगें
नये सवेरे की इस खुशबु को
चहुँओर फैलायेंगे

आकाश की चादर ओढ़े
ना कोई रात गुजारेगा
हर तन पर होगी उसकी इज्जत
ऐसा उजियारा लायेगें।

वो छोटा पौधा !

आज अचानक से जंगल में खलबली मच गयी, मशीनों की कर्कश आवाजें गूंज रही थी। उस 'छोटे पौधे', जिसके पास शिलान्यास पत्थर लग रहा था, ने इन्हें पहली बार देखा था। हालांकि पहले भी उसने आदमी देखे थे, लेकिन वो पेड़ों की 'मरहम–पट्टी' कर चले जाते थे। देखते–देखते पेड़ों की बसी–बसायी दुनिया उजड़ गयी और पक्षियों के झुण्ड चीखते–चिल्लाते गायब हो गये। उस छोटे पौधे के पास से भी मशीन गुजरती है कि किनारे लगे पेड़ों की छांव में बैठे सरकारी आदमी की आवाज आयी, अरे, इसे रहने दो। इधर मंच लगेगा, गमले आदि के बीच में शोभा बढ़ायेगा।

....कुछेक सरकारी आदमियों को छोड़कर, सारे लोग दौड़–दौड़ कर काम में लगे थे और उनके शरीर से पसीने 'पेड़ो के आंसू' के रूप में धरती पर गिर रहे थे। शाम होते–होते मंच नये–नये गमलों के साथ लगभग तैयार था।

अगले दिन अपने काफिले के साथ मंत्री महोदय आये और कैमरो के फ्लैशों के बीच प्लांट का शिलान्यास किया। मंच पर रखे गमले काफी सुहावने लग रहे थे। स्थानीय लोगों से, जोकि उस छोटे पौधे की तरह घटनाक्रम को कौतूहल से देख रहे थे। मंत्री महोदय ने उनके रोजगार, क्षेत्र के विकास और हरियाली का वायदा किया। वो छोटा पौधा भी मंत्री महोदय की बातें सुनकर स्थानीय लोगों की तरह भविष्य की हरियाली की तस्वीर को लेकर उत्साहित था।

आज कई वर्ष बीत गये हैं अब पक्षियों की कलरव की जगह प्लांट के सायरन से सुबह की शुरूआत होती है, कच्चे खपरैलो के घरों की जगह पर ऊँची–ऊँची शीशे की तरह चमकती इमारतें बन गयी हैं। कभी–कभी रात में ढोल नगाड़ों के साथ मानवों की मधुर आवाजों के स्थान पर दिन रात वाहनों का शोर आता है। हां, वो छोटा पौधा अब बड़ा हो गया है और प्लांट के गेट के पास चौकीदार की तरह खड़ा है और भूखे नंगे स्थानीय लोगों के धरने प्रदर्शन में लोगो को अपनी छांव देकर संतोष करता है और आज भी अपने बचपन के साथियों की याद मे डूबा सोचता है कि ये मानव जब मानव का न रहा हम तो फिर भी..... ??

वीरेन्द्र मौर्य
ए.डी.ई.टी.–2010 बैच

विचार

बोल-अनमोलः क्रोध बनाम विश्वास....

1. ''क्रोध मूर्खता से आंरभ होता है और पश्चाताप पर जाकर समाप्त होता है'' – पाइथेगोरस

2. ''संतोषी मनुष्य के तीव्र क्रोध से सावधान रहना चाहिए'' – ड्राइडेन

3. ''क्रोध की सर्वश्रेष्ठ औषधि विलंब है'' – सेनेका

4. ''क्रोध मन के दीपक को बुझा देता है'' – इंगरसोल

5. क्रोध से वही मनुष्य सबसे अच्छी तरह बचा रहता है जो ध्यान रखता है कि ईश्वर हर समय उसे देख रहा है'' – प्लेटो

6. क्रोध के सिंहासन पर बैठते ही बुद्धि वहां से खिसक जाती है'' – एम.हेनरी

7. ''मनुष्य प्रायः अपने विवेक की पूर्ति क्रोध द्वारा पूर्ण कर लेता है'' – एलजर

8. ''शांति की शुरूआत मुस्कराहट से होती है'' – मदर टेरेसा

9. ''जीवन न्याय मुक्त नहीं है, इसकी आदत डाल लीजिये'' – बिल गेट्स

10. ''आपके सबसे असंतुष्ट कस्टमर आपके सीखने का सबसे बड़ा स्रोत हैं'' – बिल गेट्स

11. ''किसी वृक्ष को काटने के लिए आप मुझे छः घंटे दीजिये और मैं पहले चार घंटे कुल्हाड़ी की धार तेज करने में लगाऊंगा'' – अब्राहम लिंकन

12. ''साधारण दिखने वाले लोग ही दुनिया के सबसे अच्छे लोग होते है, यही वजह है कि भगवान ऐसे बहुत से लोगों का निर्माण करते हैं'' – अब्राहम लिंकन

13. ''सफलता एक घटिया शिक्षक है, यह लोगों में यह सोच विकसित कर देता है कि वो असफल नहीं हो सकते'' – बिल गेट्स

14. ''व्यक्ति अकेले पैदा होता है और अकेले मर जाता है, और वो अपने अच्छे और बुरे कर्मो का फल खुद ही भुगतता है, और वह अकेले ही नरक या स्वर्ग में जाता है'' – चाणक्य

15. ''मैं सुनता हूँ और भूल जाता हूँ, मैं देखता हूँ और याद रखता हूँ, मैं करता हूँ और समझ जाता हूँ'' – कन्फ्यूशियस

16. ''अवसर के बिना काबिलियत कुछ भी नहीं है''

17. चीनी कहावत..

- ''यदि आप एक वर्ष की व्यवस्था कर रहे हैं, तो चावल उगाएँ, यदि आप एक दशक की व्यवस्था कर रहे हैं तो वृक्ष लगाएँ, अगर आप जीवनभर की व्यवस्था कर रहे हैं तो लोगों को शिक्षा दें।''
- ''ऐसा छात्र जो प्रश्न पूछता है, वह पांच मिनट के लिए मूर्ख रहता है लेकिन जो पूछता ही नहीं है वह जिदंगी भर मूर्ख ही रहता है।''
- ''अध्यापक मार्गदर्शक का काम करते हैं। चलना आपको स्वयं पड़ता है।''
- ''अच्छा क्या है, इसे सीखने के लिए एक हजार दिन भी अपर्याप्त हैं, लेकिन बुरा क्या है, यह सीखने के लिए एक घंटा भी ज्यादा हैं।''
- ''शिक्षक द्वार खोलते हैं, लेकिन प्रवेश आपको स्वयं ही करना होता है।''
- ''अगर आप चाहते हैं कि किसी को मालूम न पड़े, तो ऐसा काम ही न करें।''
- ''यदि मुस्कान आपके स्वभाव में नहीं तो दुकानदारी के चक्कर में नहीं पड़े।''
- ''जो हाथ फूल बांटता है उस हाथ में भी सुगंध आ जाती है।''
- ''आप अपने पास दुखों को आनें से नही रोक सकते हैं, लेकिन आप उन दुखों से घबराएं नहीं, ऐसा तो आप कर सकते हैं।''

18. ये है जीवन के चार सच : महात्मा बुद्ध...

- इस संसार में दुःख अनिवार्य है, पूरी तरह से दुखों से मुक्ति संसार में रहते हुए संभव नहीं है।
- इस दुःख का एक कारण है इच्छा, जिसे दूर करने से इन दुखों से छुटकारा पाया जा सकता है।
- दुखों का प्रमुख कारण इच्छाएं या वासनायें ही हैं।
- कभी पूरी न होने वाली इन इच्छाओं और वासनाओं को नष्ट करके ही इन दुखों को दूर किया जा सकता है।

संग्रह : **सुरेश चन्द्र शर्मा**
सहायक महानिदेशक (मोबाइल)

लेख

राष्ट्र भाषा - हिन्दी
अथवा
निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल

राष्ट्र शब्द का प्रयोग किसी देश अथवा वहाँ बसने वाली जनता के लिए होता है। प्रत्येक राष्ट्र अपना स्वतन्त्र अस्तित्व रखता है। उसमें अनेक जातियों और धर्मों को मानने वाले लोग सम्मिलित रहते हैं। उस राष्ट्र में विभिन्न प्रांतो के निवासी विभिन्न प्रकार की भाषा बोलते हैं। इस विभिन्नता के साथ–साथ उनमें एकता भी रहती है। पूरे राष्ट्र का शासन एक ही केन्द्र से होता है। अतः राष्ट्र की एकता को दृढ़ बनाने के लिए ऐसी भाषा की आवश्यकता होती है, जिसका प्रयोग पूरे राष्ट्र के महत्वपूर्ण कार्यो में किया जाता है। केन्द्रीय सरकार के कार्य भी उसी भाषा में होते हैं, ऐसी व्यापक भाषा राष्ट्र भाषा कहलाती है।

राष्ट्र भाषा तो देश की अधिकांश जनता की भाषा होती है। उसके लिखने–पढ़ने तथा समझने वाले प्रायः सभी प्रांतों में होने चाहिए। राष्ट्र भाषा की लिपि तथा शब्दावली को वैज्ञानिक, सुन्दर तथा सरल होना चाहिए। उसकी वर्णमाला हर प्रकार की ध्वनियों को व्यक्त करनें मे समर्थ होनी चाहिए। उस भाषा में उन्नत साहित्य, दर्शन, ज्योतिष आदि विषयों की पुस्तक होनी चाहिए। राष्ट्र भाषा की सहायक, अनेक भाषाएं होनी चाहिए। राष्ट्रीय चेतना के अनुकूल राष्ट्र भाषा को भी होना चाहिए। राष्ट्र भाषा संस्कृति तथा परंपरा की पोषक होती है। राष्ट्र भाषा ही राज्य भाषा बनने योग्य होनी चाहिए। राजनीतिक संघर्ष में राष्ट्रीय भावनाओं का जोर अधिक रहता है। उस समय का साहित्य जिस भाषा में अधिक प्रकाशित होता है, वही भाषा सरलता से राष्ट्र भाषा बन जाती है। राष्ट्र भाषा भी राष्ट्रीयता के विकास में सहायक सिद्ध होती है क्योंकि :

"बिन निज भाषा ज्ञान के मिटत न हिय को सूल ।।"

भारत प्राचीन काल से एक ऐसा देश रहा है जिसमें विभिन्न राज्य सम्मिलित रहे हैं। सभी में अपने देश के प्रति प्रेम, आदर और उसके प्रति त्याग की भावना रही है किंतु सभी राज्यों की सामूहिक भावना की अभिव्यक्ति तत्कालीन संस्कृत भाषा में हुई है। यही कारण है कि संस्कृत भाषा में राष्ट्रीयता की भावना का वह रूप मिलता है जिसे राष्ट्रीय भावना कहते हैं। हिंदी साहित्य के वीरगाथा काल में बाह्य आक्रमणों के कारण हिंदू राष्ट्रीयता का विकास हुआ। परन्तु संस्कृत उस काल से पूर्व भारत की राष्ट्रभाषा रही। इसी प्रकार यूरोप में लैटिन, रोमन आदि भाषाएं राष्ट्र भाषा बनी रहीं। समय और परिस्थितियों के परिवर्तन के साथ राज्यों का विभाजन हुआ। फलस्वरूप उनकी संख्या बढ़ी और उनके प्रभाव में प्रांतीय भाषायें राज्य विशेष की राष्ट्र भाषाएं बनती चली गई। फिर भारतेंदु युग में राष्ट्रीय भावना का उदय नए रूप में हुआ। पुनः राष्ट्रीयता का व्यापक अर्थ लिया जाने लगा तथा हिंदी में राष्ट्रीय भावनाओं का विकास होने लगा। सन् 1947 में भारत स्वतंत्र हुआ और उसे एक ऐसी राष्ट्र भाषा की आवश्यकता हुई, जिसमें निम्नलिखित गुण हों –

(1) उस भाषा को प्रजातंत्र भारत की अधिकतम जनता के लिए सुगम तथा सरलतापूर्वक पठनीय होना चाहिये।
(2) उस भाषा की लिपि तथा शब्दावली भारत के प्रत्येक भाग के लिए उपयोगी तथा अनुकरणीय हो सके।
(3) संस्कृत भाषा के शब्द प्रायः सभी भारतीय भाषाओं में मिलते हैं। अतः उस भाषा की प्रकृति संस्कृत के अधिक समीप हो।

(4) उस भाषा में ज्ञान, विकास, अध्यात्म आदि विषयों को व्यक्त करने की क्षमता बढ़ाई जा सके।
(5) उस भाषा का प्रयोग भारत की अधिकांश जनता करती हो।

इन सभी आवश्यकताओं की पूर्ति हिंदी कर सकती है। इसकी शब्दावली और लिपि इतनी सरल और वैज्ञानिक है कि सभी भारतीय इसको सरलतापूर्वक समझ और सीख सकते हैं। यह देखा गया है कि अन्य सुदूर प्रांतो के लोग भी हिंदी बोली जाने वाली भूमि में आ कर स्वल्प काल में ही इसे सीख लेते हैं, और बोलने–समझने लग जाते हैं, पर अन्य प्रांतो की भाषाओं के संबंध में अपेक्षाकृत अधिक कठिनाई पड़ती है। इसी कारण यह भाषा अधिक उन्नत भी है। ज्ञान, विज्ञान आध्यात्मिक आदि से संबद्ध विषयों का प्रतिपादन इसमें सरलतम ढंग से हो सकता है। इसकी व्यापकता भी अन्य प्रांतीय भाषाओं से अधिक है। मिथिला से लेकर पंजाब तक तथा विंधयांचल से उत्तर के पूरे क्षेत्र में इसका प्रयोग होता है। इसकी प्रकृति संस्कृत से अधिक साम्य रखती है। अतः यह राष्ट्र भाषा के सभी सामान्य गुणों से युक्त है तथा इसकी त्रुटियां सरलता से दूर की जा सकती हैं। किसी ने कहा भी है कि –

"हिंदी भारत माता के भाल की बिंदी है।"

अन्य सभी भारतीय भाषाओं का क्षेत्र हिंदी की अपेक्षा बहुत सीमित है। उनकी लिपि तथा शब्दावली कठिन तथा एक देशीय है। संस्कृत शब्द अन्य भाषाओं में आ कर अधिकतर बदले प्रतीत होते हैं। अन्य भाषाओं की प्रकृति भारत की चिर–परिचित संस्कृत भाषा से अधिक भिन्न है। दक्षिण भारत की भाषाओं का परिवार भी भिन्न है। इस प्रकार भारत की अन्य भाषाएं प्रयत्न करने पर भी संभवतः हिंदी जैसी सर्वग्राह्य नहीं बन पायेंगी। अन्य भाषाओं में इतनी नमनीयता नहीं है जो भारत की बदलती हुई परिस्थिति के अनुसार बन सकें। फिर भी प्रांतीय भाषा के रूप में उनकी उपयोगिता अक्षुण्ण है। उनका संरक्षण और संवर्द्धन आवश्यक है।

भारत जैसे विशाल राष्ट्र के लिए, जिसमें अनेक जाति, धर्म और परंपरा को मानने वाले लोग बसते हैं और जहां अनेक प्रांतीय भाषाएं बोली और लिखी–पढ़ी जाती हैं, हिंदी ही राष्ट्र भाषा बन सकती है। भारतीय समाज की सबसे बड़ी विशेषता–अनेकता में एकता, विषमता में समता, विभिन्नता में सहयोग है। भारतीय संस्कृति की ही यह विशेषता है कि विभिन्न प्रकार के लोगों को उनकी जातिगत विशेषता के साथ उन्हें अपने में आत्मसात् कर लेती है। इसी प्रकार हिंदी एक ऐसी भाषा है जो भारत की राष्ट्रीयता को अविकल रखते हुए पूरे देश की राष्ट्र भाषा बन सकती है।

हिंदी भाषा स्वयं वैज्ञानिक होने के साथ–साथ इसमें वैज्ञानिक तत्वों को ग्रहण करने की अधिक क्षमता है। विज्ञान में प्रयुक्त शब्दावली का निर्माण हिंदी में सरलतापूर्वक हो सकता है। कारण यह है कि आधुनिक विज्ञान की शब्दावली हिंदी में प्रर्याप्त मात्रा में बन गई है। साथ ही गणित और ज्योतिष के ऐसे अनेक शब्द हैं जो ज्यों–के–त्यों विभक्ति हटाकर हिंदी में ग्रहण कर लिये जाते हैं और अनेक ग्रहण भी कर लिए गए है। अंग्रेजी या अन्य भाषाओं के शब्दों को भी अपने व्याकरण के अनुसार शासित करके अपनाने में हिन्दी की क्षमता सर्वाधिक है। आध्यात्मिक ज्ञान संबधी साहित्य हिन्दी में पर्याप्त मात्रा में है। भारतीय जन मानस भी आज अपनी भाषा के प्रति जागरूकता दिखाने का संकल्प ले रहा है। इससे विकास की सभांवना बढ़ती जा रही है। इन पुनीत तथा राष्ट्र कल्याण के कार्य को सफल बनाने की प्रतिज्ञा करते हुए हमें भारतेंदु हरिशचन्द्र की निम्नलिखित उक्ति को अपने व्यावहारिक जीवन में अपनाना चाहिए।

"निज भाषा उन्नति अहै सब उन्नति को मूल।"

अमरदीप
कनिष्ठ अनुवादक (स्वीचिंग), टी.ई.सी.

विचार

राष्ट्रीय एकता पर हिंदी का प्रभाव

हिंदी को सुचारू रूप से कामकाजी भाषा के तौर पर इस्तेमाल करने का काम बड़ा दूरदर्शितापूर्ण है और इसका परिणाम बहुत दूर आगे चल कर निकेलगा। प्रांतीय ईर्ष्या को दूर करने में जितनी सहायता हमें हिन्दी प्रचार से मिलेगी, उतनी दूसरी किसी चीज से नहीं मिल सकती। अपनी प्रांतीय भाषाओं की भरपूर उन्नति कीजिए। उसमे कोई बाधा नहीं डालना चाहता और न हम किसी की बाधा को सहन कर सकते हैं, पर सारे प्रांतों की सार्वजनिक भाषा का पद हिंदी या हिन्दुस्तानी ही को मिला। नेहरू रिर्पोट में भी इसी की सिफारिश की गई है। यदि हम लोगों ने तन मन से प्रयत्न किया तो वह दिन दूर नहीं है, जब भारत प्रांतीय ईर्ष्या को पूर्ण रूप से समाप्त कर सकेगा। देश की एकता के लिए एक भाषा का होना जितना आवश्यक है, उससे अधिक आवश्यक है देश भर के लोगो में देश के प्रति विशुद्ध प्रेम तथा अपनापन होना। अगर आज हिंदी भाषा मान ली गई है, तो इसलिए नहीं कि वह किसी प्रांत विशेष की भाषा है, बल्कि इसलिए कि वह अपनी सरलता, व्यापकता तथा क्षमता के कारण सारे देश की भाषा हो सकती है और सारे देश के लोग उसे अपना कह सकते हैं।

उमेश खेमनानी
ए.डी.ई.टी.–2010 मैच
ट्रांसमिशन (टी.ई.सी.)

कविता

मेघ मलहार

सावन की हरियाली मिट्टी का वो वेश
पास है देश अपना, दूर कहीं परदेश,
अब की बरस खूब रही आमों की बहार
खाए मन भर के और बनाए अचार
बरसात की बूँद ने जब मचाया शोर
बचपन के दिन याद कर नाचे बन के मोर,

सर्दियों की धूप और जाड़े की रात
मौसम ऐसा बदला अब भाए न कोई बात
होली के रंगो में छुपी थी मन की बात
जिन्हें न रंग सके इस बरस, मिलेंगे अगले साल
बसंत ऋतु जब आए हो फूलों की बात
ढूंढो ऐसे अपने जो सदा निभाए साथ
जो सदा निभाए साथ

रमा कमल
(पत्नी, श्री अजय कमल)
पूर्व निदेशक, पश्चिमी क्षेत्र, टी.ई.सी. मुंबई)

कविता

इस संसार में आने वालों इतना समझ लो

ओ आने वालों इतना समझ लो,
इस जग से जाना ही होगा
यदि रह गई है कुछ वासनाएँ
उनके लिए फिर आना ही होगा
जब तक किसी पर अधिकार रखकर
जितना अधिक सुख तुम भोगते हो
मानो न मानों जीवन में अपने
पुण्यों की पूँजी गँवाना ही होगा
दानाधिकारी बनकर किसी से
श्रद्धा के बाहर यदि धन लिया है
तुम लेके देना भूलों भले ही
जो ऋण लिया है वह चुकाना ही होगा
जिससे किसी को दुख हो रहा हो
ऐसा असत् कर्म न होने पाये
सुख के लिए जो दुख दे किसी को
उसको कभी न कभी दुख उठाना ही होगा
तुम दूसरों को वह देते रहना
जो दूसरें स्वयं चाहते हो
जैसा भी दोगे वैसा प्रकति से
कई गुना तुमको पाना ही होगा
कुछ जानना है तो अपने को जानों
मानना है तो ईश्वर को ही मानों
यदि करनी है तो सबकी सेवा तुम करो
जीवन किसी विधि बिताना ही होगा
छोड़ों अहंता ममता जगत की
परमात्मा से ही प्रीति जोड़ो
देखो पथिक तुम जिसकी शरण हो
उन पर ही विश्वास करना ही होगा

गर्भपात सब पापां रो बाप

गर्भपात महापाप है, सब पापां रो बाप
बालक री हत्या करी, मुख देखण रो पाप
मुख देखण रो पाप, जिणा घर जल मत पीज्यो
ब्यांह सगाई होय, नूंतो कदेई न दीज्यो
बचो घोर महापाप सू भाई–बहनां आप
गर्भपात महापाप है, सब पापां रो बाप
दूजा पाप छोटा, बड़ा गर्भपाप अति घोर
गर्भ गैर राजी हुंवै नहीं नरक में ठौड़
नहीं नरक में ठौड़, हुया नर–नारी निपूता,
पकड़–पकड़ जमदूत, मारसी सिर पर जूता,
राक्षस सूं नीचा हुया, माणस रैया न ढ़ोर
दूजा पाप छोटा, बड़ा गर्भपात अति घोर,
गर्भ गिरावै जाण्कर, वा मायड़ मत जाण
कलजुग में परगट भई, बवकासुर की माण
बवकासुर की माण, पूतना ब्रज में अइ
थन के जहर लगाय कृष्ण को मारण धाई
चूसण लागा कान्हाजी खेंच लिया सब प्राण
गर्भ गिरावै जाण कर, वा मायड़ मत जाण
डाक्टर जी डाकी बण्या, डाक्टरणी जी डाकण
बाप कालो नाग बण्यो, माय काली सांपण
गर्भ गिरावै हत्या कर दी, अे पापी अर पापण
देख्यां ही इण जलादां नै हिरदो लाग्यो कांपण

सुरेन्द्र पाल
कैशियर, वित्त विभाग, टी.ई.सी.

मंथन

अमूल्य रत्न

हम सभी ने समुंदर मंथन की कहानी तो सुन रखी है पर क्या कभी इस बात पर गौर किया है कि इस कहानी में क्या ज्ञान छिपा है ? आईए आज इस बात पर मंथन हो जाए।

कहानी कुछ यूँ है कि असुर और देवताओं ने पहाड़ से समुंदर मंथन किया। रस्सी हेतु सर्प का उपयोग किया गया। मंथन में चौदह रत्न प्राप्त हुए।

आज के संदर्भ में अगर विश्लेषण किया जाए तो पहाड़ शरीर का प्रतीक है। सर्प हमारी इन्द्रियों को दर्शाता है। समुंदर ये पूरा विश्व है। हमारे अच्छे व बुरे विचार देवताओं तथा असुर समान हैं। हम इस दुनिया मे क्यों आए हैं। किस प्रकार का मंथन हम कर रहे हैं। जैसा मंथन वैसा फल। स्वर्ग और नर्क कहीं और नहीं, सब यहीं है। सही मंथन हो तो चौदह नहीं अपार दौलत इस विश्व रूपी समुंदर में है। समुंदर तो स्रोत है।

देखा जाए तो सोते जागते मंथन तो होता ही रहता है। यह खेल है मन का। संत कबीर ने खूब कहा है ''बाँसुरी बजाने वाले को खुद बाँसुरी ही बजाने लगी'' अर्थात् मन जो इंसान का नौकर है वही मालिक बन जाता है। अक्सर हम कहते हैं मेरा मूड नहीं चाहे कार्य कितना भी जरूरी क्यों न हो।

इस मन को ट्रेनिंग कैसे मिले। पुरातन काल में शायद इस बात की व्यवस्था थी। कहा जाता है कि पहले पच्चीस वर्ष गुरूकुल में गुजरते थे और अब बचपन से टी.वी., विडियो गेम, भौतिक सुख कि होड़ मे माता पिता बच्चों के मन को क्या प्रशिक्षण देते है, ये हमारे अपने अवलोकन का विषय है।

कितनी विचित्र बात है कि साधु संत जिनके दोहे व सिखवानियाँ की चर्चा हम करते हैं वे अक्सर ज्यादा पड़े लिखे नहीं थे। संत कबीर के पास ऐसा क्या ज्ञान था जो ऐसे बोल कह पाये। कुछ दोहे यूँ है :

माला फेरत जुग भया, फिरा न मन का फेर,
कर का मनका डार दे, मन का मनका फेर।
....यानि कि जब तक मन के भाव नहीं बदले जाते मन की हलचल शांत नहीं होती।

बुरा जो देखन मैं चला, बुरा न मिलिया कोय,
जो दिल खोजा अपना, मुझसे बुरा न कोय।
मन ऐसा निर्मल बया जैसे गंगा नीर
पीछे पीछे हरि फिरे कहत कबीर कबीर
.... यानि मन अगर अपनी बड-बड बंद कर दे तो ईश्वरीय अनुभव हो सकता है।

पहले मैं था तो हरि नहीं था, अब हरि है तो मैं नही हूँ – यानि कि ''मैं'' का कोई वजूद नहीं है इक ख्याल मात्र है। जब असली ज्ञान हो जाता है तो पता चलता है कि केवल ईश्वर ही है। इसी संदर्भ में सरश्री (वर्तमान आध्यात्मिक गुरू) ने मनन करने को कहा है, ''ईश्व ही है, तुम हो कि नहीं ये पता करो, पक्का करो।''

अब यह सवाल उठ सकता है कि क्या मन बेकार है, बाधा है ईश्वरीय अनुभव में ? ऐसा नहीं है। मन, शरीर और बुद्धि सांसारिक विकास हेतु जरूरी है। वैज्ञानिक चमत्कारों के पीछे इन्हीं का योगदान है। मन को लगता है कि सब वही कर रहा है पर करने वाला ईश्वर ही है, शरीर तो निमित्त मात्र है। यह ज्ञान होना जरूरी है और इस ज्ञान रत्न को प्राप्त करने के लिए चाहिए मंथन। मंथन इस बात का कि ''मैं कौन हूँ'' ? हमें जीवन मिला है कि जीवन को हम मिले हैं ?
हम इस पृथ्वी पर क्यों आए हैं?

उम्मीद है कि आप मंथन शुरू कर इस अमूल्य रत्न को प्राप्त करेंगे।

एस.के.भल्ला
(निदेशक, राष्ट्रीय दूरसंचार नीति
शोध, नवप्रवर्तन एवं प्रशिक्षण संस्थान)

कविता

"मैं किसी को क्या कहुँ"

मैं किसी की बात को क्या कहूँ, मुझे खुद का भी पता नहीं
मैं तलाशे मंजिल भूल कर, सही रास्ते पर चला नहीं।। 1 ।। मैं किसी की .....
मेरे चाहने वाले अनेक हैं, मेरे निंदको की कमी नहीं
वो बुरा कहें या भला कहें, मुझे उनसे कोई गिला नहीं ।। 2 ।। मैं किसी की .....
कोई मरने पर रजामंद है, तो किसी को जीना पंसद है
यहाँ मरने की तो रजा नहीं, यहाँ जीने का भी मज़ा नहीं ।। 3 ।। मैं किसी की .....
मेरे दिल में कितने सवाल हैं, मुझे जवाब कोई मिला नहीं
मेरा दर्द जो मिटा सके, वो किसी के पास दवा नहीं ।। 4 ।। मैं किसी की .....
मैं भला बुरा न समझ सका, इसी वास्तें मैं भटक गया
मैं सही जगह पे डटा नहीं, मैं गलत राह से हटा भी नहीं ।। 5 ।। मैं किसी की .....
मेरी इतनी उम्र गुजर गई, मैं प्रभु की शरण में न आ सका
जो सदा से ही मेरे पास था, मैं उससे अभी तक मिला नहीं ।। 6 ।। मैं किसी की .....
मेरे दिल की दिल में रह गई, मैं किसी को दिल की न कह सका
जो सुने कोई वो कहा नहीं, जो कहा किसी ने सुना नहीं ।। 7 ।। मैं किसी की .....
कभी मुखलसी में खुश रहा, कभी जर से भी न सकूँ मिला
कभी खुद से खौफ लगा रहा, कभी दुश्मनों से डरा नहीं ।। 8 ।। मैं किसी की .....

राकेश बेदी
सलाहकार, टी.ई.सी.

भक्ति

संत कबीर दास

जिन खोजा तिन पाइया, गहरे पानी पैठ,
मैं बपुरा बूडन डरा, रहा किनारे बैठ।

कबीर एक ऐसी शख्शियत थे जिसने कभी शास्त्र नहीं पढ़ा, फिर भी ज्ञानियों की श्रेणी में सर्वोपरी। कबीर, एक ऐसा नाम जिसे फकीर भी कह सकते हैं और समाज सुधारक भी।

मित्रों, कबीर भले ही छोटा सा एक नाम हो पर ये भारत की वो आत्मा है जिसने रूढ़ियों और कर्मकाडों से मुक्त भारत की रचना की। कबीर वो पहचान है जिन्होनें, जाति–वर्ग की दीवार को गिराकर एक अद्भुत संसार की कल्पना की।

मानवतावादी व्यवहारिक धर्म को बढ़ावा देने वाले कबीर दास जी का इस दुनिया में प्रवेश भी अद्भुत प्रसंग के साथ हुआ। माना जाता है कि उनका जन्म सन् 1398 में ज्येष्ठ पूर्णिमा के दिन वाराणसी के निकट लहरतारा नामक स्थान पर हुआ था। उस दिन नीमा नीरू संग ब्याह कर डोली में बनारस जा रही थीं, बनारस के पास एक सरोवर पर कुछ विश्राम के लिये वो लोग रूके थे। अचानक नीमा को किसी बच्चे के रोने की आवाज आई वो आवाज की दिशा में आगे बढ़ी। नीमा ने सरोवर में देखा कि एक बालक कमल पुष्प में लिपटा हुआ रो रहा है। नीमा ने जैसे ही बच्चा गोद में लिया वो चुप हो गया। नीरू ने उसे साथ घर ले चलने को कहा किन्तु नीमा के मन में ये प्रश्न उठा कि परिजनों को क्या जवाब देंगे। परन्तु बच्चे के स्पर्श से धर्म, अर्थात् कर्तव्य बोध जीता और बच्चे पर गहराया संकट टल गया। बच्चा बकरी का दूध पी कर बड़ा हुआ। छः माह का समय बीतने के बाद बच्चे का नामकरण संस्कार हुआ। नीरू ने बच्चे का नाम कबीर रखा किन्तु कई लोगों को इस नाम पर एतराज था क्योंकि उनका कहना था कि, कबीर का मतलब होता है महान, तो एक जुलाहे का बेटा महान कैसे हो सकता है ? नीरू पर इसका कोई असर न हुआ और बच्चे का नाम कबीर ही रहने दिया। ये कहना अतिश्योक्ति न होगी कि अनजाने में ही सही बचपन में दिया नाम बालक के बड़े होने पर सार्थक हो गया। बच्चे की किलकारियाँ नीरू और नाम के मन को मोह लेतीं। अभावों के बावजूद नीरू और नीमा बहुत खुशी–खुशी जीवन यापन करने लगे।

कबीर को बचपन से ही साधु संगति बहुत प्रिय थी। कपड़ा बुनने का पैतृक व्यवसाय वो आजीवन करते रहे। बाह्य आडम्बरों के विरोधी कबीर निराकार ब्रह्म की उपासाना पर जोर देते हैं। बाल्यकाल से ही कबीर के चमत्कारिक व्यक्तित्व की आभा हर तरफ फैलने लगी थी। कहते हैं–उनके बालपन में काशी में एकबार जलन रोग फैल गया। उन्होनें रास्ते से गुजर रही बुढ़ी महिला की देह पर धूल डालकर उसकी जलन दूर कर दी थी।

कबीर का बचपन बहुत सी जड़ताओं एवं रूढ़िया से जूझते हुए बीत रहा था। उस दौरान ये सोच प्रबल थी कि इंसान अमीर है तो अच्छा है। बड़े रसूख वाला है तो बेहतर है। कोई गरीब है तो उसे इंसान ही न माना जाये। आदमी और आदमी के बीच फर्क साफ नजर आता था। कानून और धर्म की आड़ में रसूखों द्वारा गरीबों एवं निम्नजाति के लोगों का शोषण होता था। कबीर सदैव सामाजिक कुरीतियों के विरूद्ध थे और इसे कैसे

दूर किया जाये इसी विचार में रहते थे।

एक बार किसी ने बताया कि संत रामानंद स्वामी ने सामाजिक कुरीतियों के खिलाफ लड़ाई छेड़ रखी है। कबीर उनसे मिलने निकल पड़े किन्तु उनके आश्रम पहुँचकर पता चला कि वे मुसलमानों से नहीं मिलते। कबीर ने हार नहीं मानी और पंचगंगा घाट पर रात के अंतिम पहर पर पहुँच गये और सीढ़ी पर लेट गये। उन्हे पता था कि संत रामानंद प्रातः गंगा स्नान को आते हैं। प्रातः जब स्वामी जी जैसे ही स्नान के लिये सीढ़ी उतरे रहे थे उनका पैर कबीर के सीने से टकरा गया। राम–राम कहकर स्वामी जी ने अपना पैर पीछे खींच लिया तब कबीर खड़े होकर उन्हे प्रणाम किये। संत ने पूछा आप कौन? कबीर ने उत्तर दिया आपका शिष्य कबीर। संत ने पुनः प्रश्न किया कि मैने कब शिष्य बनाया? कबीर ने विनम्रता से उत्तर दिया कि अभी–अभी जब आपने राम–राम कहा, मैनें उसे अपना गुरूमंत्र बना लिया। संत रामदास कबीर की विनम्रता से बहुत प्रभावित हुए और उन्हें अपना शिष्य बना लिया। कबीर को स्वामी जी ने सभी संस्कारों का बोध कराया और ज्ञान की गंगा में डुबकी लगवा दी।

कबीर पर गुरू का रंग इस तरह चढ़ा कि उन्होने गुरू के सम्मान में कहा हैं,

सब धरती कागज करू, लेखनी सब वनराज।
सात समुंद्र की मसि करू, गुरू गुंण लिखा न जाए।
यह तन विष की बेलरी, गुरू अमृत की खान।
शीश दियो जो गुरू मिले, तो भी सस्ता जान।

ये कहना अतिश्योक्ति नहीं है कि जीवन में गुरू के महत्व का वर्णन कबीर दास जी ने अपने दोहों में पूरी आत्मियता से किया है। कबीर मुसलमान होते हुए भी कभी मांस को हाँथ नहीं लगाया। कबीर जाँति–पाँति और ऊँच–नीच के बंधनो से परे फक्कड़, अलमस्त और क्रांतिदर्शी थे। उन्होने रमता जोगी और बहता पानी की कल्पना को साकार किया। कबीर का व्यक्तित्व अनुकरणीय है। वे हर तरह की कुरीतियाँ का विरोध करते हैं। वे साधु–संतो और सूफी–फकीरों की संगत तो करते हैं लेकिन धर्म के ठेकेदारों से दूर रहते हैं। उनका कहना है कि –

हिंदू बरत एकादशी साधे दूध सिंघाडा सेती।
अन्न को त्यागे मन को न हटके पारण करे सगौंती।।
दिन को रोजा रहत है, राति हनत है गाय।
यहां खून वै वंदगी, क्यों कर खुशी खोदाय।।

जीव हिंसा न करने और मांसाहार के पीछे कबीर का तर्क बहुत महत्वपूर्ण है। वे मानते हैं कि दया, हिंसा और प्रेम का मार्ग एक है। यदि हम किसी भी तरह की तृष्णां और लालसा पूरी करने के लिये हिंसा करेंगे तो, घृणां और हिंसा का ही जन्म होगा। बेजुबान जानवर के प्रति या मानव का शोषण करने वाले व्यक्ति कबीर के लिये सदैव निंदनीय थे।

कबीर सांसारिक जिम्मेवारियों से कभी दूर नहीं हुए। उनकी पत्नी का नाम लोई था, पुत्र कमाल और पुत्री कमाली। उन्होनें पारिवारिक रिश्तों को भी भलीभाँति निभाया। जीवन–यापन हेतु ताउम्र अपना पैतृक कार्य अर्थात् जुलाहे का काम करते रहे।

कबीर घुमक्कड़ संत थे अतः उसकी भाषा सधुक्कड़ी कहलाती है। कबीर की वाणी बहुरंगी है। कबीर ने किसी ग्रन्थ की रचना नही की। अपने को कवि घोषित करना उनका उद्देश्य भी न था। उनकी मृत्यु के पश्चात् उनके शिष्यों ने उनके उपदेशों का संकलन किया जो 'बीजक' नाम से जाना जाता है। इस ग्रन्थ के तीन भाग हैं, 'साखी', 'सबद', और 'रमैनी'। कबीर के उपदेशों में जीवन की दार्शनिकता की झलक दिखती है। गुरू–महिमा, ईश्वर महिमा, सतसंग महिमा और माया का फेर आदि का सुन्दर वर्णन मिलता है। उनके काव्य में यमक, उत्प्रेक्षा, रूपक, अनुप्रास आदि अलंकारो का सुन्दर समावेश दिखता है। भाषा में सभी आवश्यक सूत्र होने के कारण हजारी प्रसाद द्विवेदी कबीर को ''भाषा का अधिनायक'' कहते हैं। कबीर का मूल मंत्र था,

''मैं कहता आँखन देखी, तू कहता कागद की लेखिन''।

कबीर की साखियों में सच्चे गुरू का ज्ञान मिलता है। संक्षेप में कहा जाता है कि कबीर के काव्य का सर्वाधिक महत्व धार्मिक एवं सामाजिक एकता और भक्ति का संदेश देने में है।

कबीर दास जी का अवसान भी जन्म की तरह रहस्यवादी है। आजीवन काशी में रहने के बावजूद अन्त समय सन् 1518 के करीब मगहर चले गये थे क्योंकि वे कुछ भ्रान्तियों को दूर करना चाहते थे। काशी के लिये कहा जाता था कि यहाँ पर मरने से स्वर्ग मिलता है तथा मगहर में मृत्यु पर नरक। उनकी मृत्यु के पश्चात् हिन्दु अपने धर्म के अनुसार उनका अंतिम संस्कार करना चाहते थे और मुसलमान अपने धर्मानुसार विवाद की स्थिति में एक अजीब घटना घटी। उनके पार्थिक शरीर पर से चादर हट गई और वहाँ कुछ फूल पड़े थे जिसे दोनों समुदायों ने आपस में बाँट लिया। कबीर की अहमियत और उनके महत्व को जायसी ने अपनी रचना में बहुत ही आत्मियता से परिलक्षित किया है।

ना नारद तब रोई पुकारा एक जुलाहे सौ मैं हारा।
प्रेम तन्तु नित ताना तनाई, जप ताप साधि सैकरा भराई।

मित्रों, ये कहना अतिश्योक्ति न होगी कि कबीर विचित्र नहीं है, सामान्य हैं किन्तु इसी साधारणपन में अति विशिष्ट हैं। हिन्दी साहित्य के इतिहास में कबीर जैसा व्यक्तित्व शायद ही कोई हो।

राजेश त्रिपाठी
सहायक महानिदेशक (स्वीचिंग)

कविता

गीत

भोगवाद की इस आँधी में
जीवन मूल्य बिखर गये
प्रेम, वासना का पर्याय
बनते देखा जिधर गये
भोगवाद की इस.....

संबंधों की भाषा बदली
रिश्ते पावन रहे नहीं
अपहरण और लूट आम है
रावण जिंदे, मरे नहीं
भोगवाद की इस.....

शक्ति बनी संसद की बेटी
सांसद शक्तिमान बने
कोटि जन की पूँजी लुटकर
पूँजीपुत्र महान बने।
भोगवाद की इस.....

चकाचौंध मे सब कुछ चमचम
सत्य जो था दिखा नहीं
सबकुछ बिकता इस बाजार में
बिरले वे जो बिके नहीं
भोगवाद की इस.....

भोगों का भूगोल जलाकर
जीवन मूल्य बचाना है
आँधी में जो उजड़ी दुनिया
फिर से उसे बसाना है
भोगवाद की इस.....

शायरी

करने की मुहब्बत हमें हिम्मत नहीं होती।
क्यूंकि बाजारे दिल में इश्क की कीमत नहीं होती।
इश्क के जज्बात में अश्क अब गिरते नहीं
सोजे अश्कों की यहाँ इज्जत नहीं होती।
सिला अपनी वफाओं का मत ढूँढ़िये जनाब
एहसानों को भूल जाने की सजा नहीं होती।
हुस्न की रूबाईयों पर उम्र मत गवाँ देना
अरमानों के टूटने की कोई वजह नहीं होती।

नये साल की मुबारक

मुबारक हो सबको यह नया साल यारों
रोज हो खुशियों की बौछार यारों।
नये वर्ष में हो नव दुनिया की रचना
नव उमंग संचारण नवजग संरचना
न भूखा हो कोई न बदहाल यारों
मुबारक हो सबको.....
नील गगन में हो नवकिरणों का नर्तन
नववसुधा निर्माण सृष्टि परिवर्तन
गिर जाये नफरत की दीवारें यारों
मुबारक हो सबको.....
हर घर में होली हो हर घर दिवाली
हर हाथ रंगों की प्यारी पिचकारी
रूठे न दीपक, न गुलाल यारों
मुबारक हो सबको.....

मनोरंजन
ए.डी.ई.टी.–2010 बैच

संस्मरण् लेख

आशाओं के पार हिमालय के द्वार
(ट्रैकिंग यात्रा वृतांत भारतीय दूर संचार सेवा-2010 बैच)

जब आपको तपती गर्मी में ठन्डी जगह जाने का या फिर जाड़े के महीने में गर्म जगह जाने का मौका मिले तो मन में कौतुहल होना स्वाभाविक है। इसी प्रकार हम सभी भारतीय दूरसंचार सेवा–2010 बैच के परिवीक्षाणार्थियों की ट्रैकिंग यात्रा थी, जो कि 4 मई 2013 से 11 मई 2013 के दौरान निर्धारित थी। कुछ अच्छा व अलग करने की ख्वाहिश में मानसिक रूप से यात्रा काफी पहले प्रारम्भ हो गयी थी। हमने 04.05.2013 को हिमाचल परिवहन की बस से यात्रा शुरू की और 05.05.2013 की सुबह अटल बिहारी बाजपेयी पर्वतारोहण संस्थान पहुँचे, जहाँ पर हमारा बेस कैंप था। मनाली की प्राकृतिक सौंदर्य देखते ही 'मन को भा गया मनाली' और रात भर की यात्रा की सारी थकान उमंग में बदल गयी।

06.05.2013 को पर्वतारोहण संस्थान के मुखिया से हम सबकी मुलाकात हुई एवं उन्होनें सम्बोधित करते हुए पर्वतारोहण, ट्रैकिंग, मनाली की संस्कृति व संस्थान से जुड़ी रोचक जानकारी दी। उसके बाद उस दिन सभी आस–पास के नजारों का आनन्द लेते हुए अपने आपको वहाँ के वातावरण के अनुसार एवं आगे के कार्यक्रम के लिए समायोजित करते रहे। 07.05.2013 को संस्थान के प्रशिक्षक ने पर्वतारोहण की कला के बारे में सिखाया एवं उसके बाद सभी अफसरों ने पर्वत पर चढ़ने व उतरने की कला का प्रदर्शन किया, कुछ परीवीक्षार्णी इतने उत्साहित थे कि उन्होनें दो बार किया।

सबसे महत्वपूर्ण दिन 08.05.2013 था जब सभी को 16 कि.मी. ट्रैकिंग के लिए, जो कि सड़क, जंगल, पहाड़ से होकर सोलंग घाटी जाता है, के लिए निदेशित किया गया। सोलंग घाटी की समुद्र तल से ऊँचाई लगभग 8500 फीट है जो कि मनाली से लगभग 2000 फीट अधिक है। जब डर की जगह उमंग हो, भय की जगह जीत हो, तो कठिन डगर भी सैर नजर आती है। हम सब के साथ इसी प्रकार हुआ, क्योंकि हम सब पूरी तरह तैयार थे। अतः बिना किसी संकोच के ट्रैकिंग के लिए निकल पड़े। उतनी विविधता शायद ही एक दिन में कही मिले, शहर, गांव, बस्ती, सड़क, बाग–बगीचे, खड्डे, टेढ़े–मेढ़े, ऊँचे–नीचे रास्ते, झरनें, नदियां, स्कूल, बाग–बगीचे, खेत सब कुछ आप रास्ते में देख सकते थे। इन सबके बीच कृछ दृश्य जैसे उस दूर–दराज के क्षेत्र में आंगनबाड़ी स्कूल, लोगों का स्वभाव व सरलता देखकर लगा कि कितनी भी विविधता हो पर मूल स्वरूप एक जैसा ही है, लोगों की सोच व विश्वास एक जैसा है। इतनी लम्बी यात्रा के बाद थकान होना स्वाभाविक है परन्तु हम सबने थकान को अपने ऊपर हावी नहीं होने दिया और योजनानुसार सोलंग घाटी पहुँचे जोकि स्काई डाइविंग, स्केटिंग के लिए प्रसिद्ध है। 09.05.13 को हम सभी सोलंग घाटी से धुंधी (Dhundhi) के लिए निकले, जो कि 8 किमी दूर एवं 10000 फीट से ज्यादा की ऊँचाई पर अवस्थित है। ऊँचाई अधिक होने एवं मार्ग में प्रायः चट्टानें खिसकने एवं हिमस्खलन के होते रहने के वजह से वह रास्ता अधिक कठिन था, यह मार्ग व्यास नदी की धारा के साथ–साथ जाता है। धुंधी हम सब समयानुसार दोपहर से पहले पहुँच गये और वहाँ का अनुपम नजारा देखकर सभी के चेहरे पर थकान की शिकन, खुशी में बदल गयी। नदी के किनारे सुंदर टैंट लगे थे, चारो तरफ से जल धारायें और झरने लगातार मधुर संगीत सुना रहे थे। सामने हनुमान टिब्बा चोटी की चमक आँखों में झलक रही थी, सब उस तक जाने को आतुर थे। वहाँ ठन्ड भी तेज थी और धूप भी तेज, इसका आनन्द वही समझ सकता था जो खुशी में आँसू बहा रहा हो। वहाँ पर

कुछ अफसरों ने व्यास नदी में स्नान भी किया पर वे शायद ही दुबारा ऐसा करने की सोंचे क्योंकि पानी इतना ठंडा था कि क्षण मात्र में शरीर सुन्न हो जाता था। दोपहर का भोजन जो कि लाजवाब था, करने के थोड़ी देर बाद हम सब हनुमान टिब्बा की तरफ अग्रसर हुए और रास्ते में व्यास नदी का अनोखा दृश्य दिखा, जमी हुई नदी के नीचे से पानी बह रहा था, ऊपर तैरती बर्फ पर से ही हम सबको नदी के मुश्किल रास्ते को पार करना था।

बर्फ के ऊपर से नदी पार करने के अलावा भी एक रास्ता था जो बेहद मुश्किल था क्योंकि करीब 5–6 फीट कूद कर ही पार कर सकते थे, कुछ लोग उस रास्ते से भी गये, परन्तु वापस आने की जुर्रत उस रास्ते से नहीं की। कुछ आफीसर्स काफी ऊँचाई तक गये एवं अपने अन्दाज में आई.टी.एस. के परचम लहरायें एवं सेलेब्रेट किया। उस दिन का सबसे रूचिकर भाग तो बर्फ पर फिसलना था, यह इतना रोचक था कि साथ मे गये सहायक महानिदेशक भी अपने आप को नहीं रोक पाये। उसके बाद वापस आते समय हम सबने लकड़िया इकट्ठी की और रात को खाना खाने के बाद आग जलाकर उसके चारों तरफ बैठ कर इसका लुत्फ उठाया। टेंट में बिना प्रकाश के रात गुजारने का ज्यादातर लोगों का पहला अवसर था, उस रात को हर कोई किसी न किसी वजह से भूल नहीं सकता है। वहाँ पर दिये गये डिनर की सबने तारीफ की जिसका अपना अलग महत्व है क्योंकि वह शहर से काफी दूर व अलग–थलग है।

10.05.2013 को हम सुबह पुनः ट्रैकिंग के रास्ते सोलंग घाटी आ गये और रिवर क्रासिंग के अनुभव से परिचित हुए और अंततः मनाली वापस आ गये। 11.05.2013 को बचे समय में हम सब ने सांस्कृतिक विरासत नागरकैसल (किला) का भी भ्रमण किया। फिर उसी रात मनाली से गाजियाबाद की यात्रा के साथ ही हम सबकी ट्रैकिंग यात्रा पर विराम लगा।

कुछ बातें सदैव स्मरण रहेगी, जैसे इतने सारे आई.टी.एस. आफिसर्स की एक साथ मौजुदगी, वहाँ मेस का खाना, रात को एडवेन्चर लॉज की यादें, अनुदेशकों का परम सहयोग व हम पर उनका विश्वास, टेंट में रात गुजारना, सालों बाद बिना किसी प्रकाश व्यवस्था के साथ, बिना बिजली के बिना मोबाइल के एक रात गुजारना आदि। सबसे बड़ी बात यह है कि "पूरी यात्रा के दौरान, किसी को भी किसी तरह की स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्या नहीं आयी",। अतः हम विश्वास से कह सकते है कि यह यात्रा बहुत ही प्रासंगिक, सद्भावपूर्ण, रोमांचकारी, योजना अनुरूप एवं आशा से अधिक सफल रही। ऐसी यात्रा से हम सबने टीम भावना से कार्य करने के महत्व को अच्छे से समझा है और इस यात्रा से हम अपने देश के सामाजिक, भौगोलिक, ऐतिहासिक, सांस्कृतिक रूप को बेहतर तरीके से समझ सकेंगे एवं उसके अनुरूप अपने आप को समायोजित कर सके। अतः ऐसी यात्राओं का नियमित प्रयोजन होता रहे तो हमारी ट्रैनिंग के लिए अधिक सार्थक होगा।

प्रीतिका सिंह एवं राहुल यादव
एल.ओ., भारतीय दूरसंचार सेवा–2010 बैच

हास्य-कविता

वन-महोत्सव

नेताजी ने,
पहला दिन– वन महोत्सव में एक पौधा लगाया,
दुसरा दिन– एक बकरी ने उस पौधे को
देखा, परखा खाया, उसे बड़ा ही मजा
आया।
तीसरा दिन – वे फिर से नेताजी दौरे पर आऐ,
पौधे के पास बकरी को मड़राते देखा,
फिर मन ही मन मुस्काएँ।
चौथा दिन – उन्हें उस बकरी के हाव–भाव भा
गये,
और उसी रात नेताजी डिनर में
उस बकरी को खा गए।
जब वे कभी भी दौरें पर आते
तो नेताजी एक पौधा वहां जरूर लगातें,
हाँ यह अलग बात हैं कि पौधों के साथ–साथ
बकरी के दल के दल गायब हो जाते।
यह सिलसिला बहुत दिनों तक चला,
तो वहाँ के लोग काफी बौखलाए
यहाँ तक कि वो सड़कों पर आए।
और जब यह प्रश्न विरोधी नेता ने संसद में
उठाया,
तो श्रीमान् जी की ओर से स्पष्टीकरण आया,
यह सच है कि मैं जब भी एक पौधा लगाता हूँ
तो एक बकरी जरूर खाता हूँ।
इस तरह एक तो मैं बकरी से पौधे को बचाता हूँ
और दूसरे उसे खा–पीकर पचाता हूँ और जनता
की सेवा के लिए अपनी सेहत बनाता हूँ।
अजीब हैं यहाँ के लोग जो जरा सी बकरी
के लिए इतना शोर मचाते है और
हम तो धीरे–धीरे पूरे देश को ही
खाने का प्रोग्राम बनाते हैं।

संकटों से हम घबड़ाते नहीं

संकटों से हम घबड़ाते नहीं,
आपदायें चाहें जितनी हों,
उसे देखकर छिप जाते नहीं
लग गये जिस काम पर
उसे कभी छोड़ा नहीं,
काम करके हम कभी पछताते नहीं।।
हो सरल अथवा कठिन हो रास्ता
कर्मवीरों को न इससे वास्ता
बढ़ चले तो अंत तक ही बढ़ते चले।।
कठिन पथ को देख हम मुस्काते हैं सदा,
संकटों के बीच हम गीत गाते है सदा,
हैं असम्भव कुछ नहीं हमारे लिए
सरल–संभव कर हम दिखाते है सदा।।
क्योंकि :–
यह असम्भव कायरों का शब्द हैं
कहा था नेपोलियन ने एक दिन
सच बताऊँ जिन्दगी ही व्यर्थ है
दर्प बीन, उत्साह बीन, और शक्तिबीन,
एक साथ मिल जाये तो
क्या हो नहीं सकता।।

संकलन कर्ता
ललन ठाकुर
सेवानिवृत एम.टी.एस., टी.ई.सी.

लेख

राष्ट्रीय एकता

आज भारत के विभिन्न राज्य एक दूसरे से बिछुड़ने और अलग होकर अपना मनोराज्य स्थापित करने के लिए आंदोलित हैं। इस स्थिति में राष्ट्रीय एकता एवं भावात्मक एकता के प्रसार की अत्यंत आवश्यकता है। अनेक भाषाओं, धर्मों एवं रीति–रिवाजों के होते हुए भी भारत एक है। विभिन्नता में अभिन्नता तथा अनेकता में एकता की भावना के कारण ही आज तक भारत एक है। भारत की इस विशेषता से प्रभावित होकर सुप्रसिद्ध कवि इकबाल ने कहा था –

''यूनान, मिस्त्र, रोमा सब मिट गए जहां से,
कुछ बात है हस्ती मिटती नहीं हमारी।।''

राष्ट्रीयता का प्रमुख उपकरण देश होता है जिसके आधार पर राष्ट्रीयता का जन्म तथा विकास होता है। इस कारण देश की इकाई राष्ट्रीयता के लिए आवश्यक है। राष्ट्रीय एकता को खंडित करने के उद्देश्य से कुछ विघनटकारी शक्तियां हमारे देश को देश न कह कर उपमहाद्वीप के नाम से संबोधित करती है। भौगोलिक दृष्टि से भारत एक विस्तृत भूखंड, जिसमें अनेक नदियां और पर्वत कभी–कभी प्राकृतिक बाधायें भी उपस्थित कर देते हैं, को ये शक्तियां संकीर्ण क्षेत्रीयता की भावनाएं विकसित करने में सहायता करती है। जबकि प्राचीन काल से ही भारतीय धर्म और संस्कृति ने समग्र राष्ट्र को एक सूत्र में बांधे रखने का अनुपम प्रयास किया है। देश की विभिन्न नदियों एवं क्षेत्रों का स्मरण नदियों से इस प्रकार होता है –

''गङ्गे च यमुने चैव गोदावरी सरस्वती,
नर्मदे सिंधु कावेरी एतऽस्मिन् सन्निधिंकुरू।
अयोध्या मथुरा माया काशी कांची अवंतिका,
पुरी द्वा रावती चैव सप्तैता मोक्ष दायिकाः।''

इन नदियों एवं पुरियों के स्मरण मात्र से भारत माता का समग्र स्वरूप अभिव्यक्त हो जाता है। तीर्थाटन, एक प्रदेश से दूसरे प्रदेश में आदान–प्रदान, गंगाजल से रामेश्वरम् में शिव का अभिषेक आदि धार्मिक–सांस्कृतिक आयोजन भारत की राष्ट्रीय एकता बनाये रखने में सदा सहायक रहे हैं। प्राचीन काल में अश्वमेध यज्ञ, राजसूय–यज्ञ आदि का आयोजन भी राष्ट्र को एक सूत्र में आबद्ध करने के लिए किया जाता था।

समस्त भारतीय धार्मिक संप्रदाय आवागमन में आस्था रखते हैं। मैत्री, करूणा, मुदिता आदि की शिक्षा पर सभी धर्म बल देते हैं। स्वस्तिक तथा ओंकार चिह्न के प्रति सभी को श्रद्धा है। अग्नि की पूजा पारसियों एवं हिंदुओ में समान रूप से प्रचलित है। सिक्ख गुरूओं ने सदा हिंदुत्व की रक्षा के लिए बलिदान दिया है। सांस्कृतिक दृष्टि से इस्लाम भी हिंदुओं के बहुत निकट है। ईसाइयों की क्षमा, दया, अहिंसा आदि भाव बौद्ध धर्म से प्रभावित प्रतीत होता है। इस प्रकार समस्त भारतीय धार्मिक संप्रदायों का बाह्य रूप अलग–अलग होते हुए भी उनकी आत्मा भारतीयता से परिपूर्ण है जिस कारण देश में राष्ट्रीय एकता का स्वरूप अक्षुण्ण है।

जहां तक भारत में भाषायी अनेकता का प्रश्न है, इन अनेकता में भी एकता के दर्शन किए जा सकते हैं। उत्तर भारत की प्रायः समस्त भाषाएं संस्कृत से निकली है, दक्षिणी भाषाएं भी संस्कृत से प्रभावित हैं। उर्दू के अतिरिक्त समस्त भाषाओं की वर्णमाला भी लगभग एक–सी ही है। इनमें केवल लिपि का ही अंतर है। रामायण तथा महाभारत समस्त भारतीय साहित्य के मूल प्रेरणा स्त्रोत रहे हैं–इस प्रकार भाषायी भेद होते हुए भी प्रत्येक भाषा में बहने वाली चिंतन धारा एक होने से राष्ट्रीय एकता बनी रहती है।

भारत की राष्ट्रीय एकता एक शासन विधान होने के कारण भी सुदृढ़ रही है। भारतीय संविधान एक है तथा शासन की बागडोर संसद् के हाथ में है। संसद् की सदस्यता प्राप्त करने का अधिकार भी इस देश में प्रत्येक धर्म, संप्रदाय, क्षेत्र एव प्रदेश के व्यक्ति को समान रूप से है। इस देश में लोकतंत्रात्मक व्यवस्था होने के कारण प्रत्येक व्यक्ति शासन व्यवस्था से जुड़ जाता है। इससे भी राष्ट्रीयता की भावना विकसित होती है तथा राष्ट्रीय एकता बनी रहती है।

संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम्।
देवाभागं यथा पूर्वे संजानाना उपासतेः।।

आधुनिक यातायात एवं संचार के साधनों ने भौगोलिक रूप से विस्तृत देश को अधिक निकट ला दिया है। हम सरलता से एक स्थान से दूसरे स्थान तक जा सकते हैं अथवा टेलिफोन आदि के माध्यम से शीघ्र संपर्क कर सकते हैं। दूरियों का इस प्रकार कम होना भी हमारी एकता को बनाए रखने में सहायक सिद्ध हुआ है। भौगोलिक रूप में हिमालय, विंध्य एवं तटीय क्षेत्रों में बंटा हुआ भारत देश एक है तथा सदा एक ही रहेगा। इस देश रूप शरीर का हिमालय मस्तक, विंध्य हृदय एवं सागर चरण हैं। जैसे मस्तक, हृदय एवं चरणों से रहित शरीर की कल्पना नही की जा सकती वैसे ही भारत अपनी इन भागौलिक अंगों से रहित नहीं हो सकता। यही भारत की राष्ट्रीय एकता का मूल आधार है।

प्रथी सिंह
स्टाफ कार चालक
टी.ई.सी.

मनन

''मन के हारे हार है, मन के जीते जीत''

मनुष्य एक मननशील प्राणी है। अपने मानसिक बल से वह असंभव से असंभव कार्य भी कर लेता है। अंग्रेजी का एक कथन है कि "Where there is a will, there is a way." मनुष्य को उसके लक्ष्य तक पहुंचाने का कार्य उसकी इच्छा शक्ति अथवा मन ही संपन्न करता है। मनुष्य जो भी उद्योग, निरंतर उन्नति करने का प्रयास अथवा कार्य करता है, सब मन के बल पर ही करता है। यदि मनुष्य का मन क्रियाशील नहीं रहता अथवा 'मन मर जाता है' तो उसके लिए संसार के समस्त आकर्षण तुच्छ अथवा अर्थहीन हो जाते हैं। उसे चारों ओर से निराशा घेर लेती है। वह जीवित होते हुए भी मरणवत् हो जाता है। कवि का यह कथन भी इसी ओर संकेत करता है कि ''मन के हारे हार है, मन के जीते जीत'' अर्थात् जब तक मनुष्य को अपने मानसिक बल पर विश्वास है तब तक वह संसार को भी जीत लेता है किंतु ''मन–मर'' जाने पर वह व्यक्ति भी पराजित हो जाता है।

इसी मानसिक बल के आधार पर वानरों की सेना के साथ श्री राम ने रावण को पराजित कर दिया था। नेपोलियन ने आल्प्स के अजेय पर्वत को पार कर लिया था तथा गुरू गोबिंद सिंह ने सवा–सवा लाख से एक को लड़ाया था। यदि मनुष्य मानसिक रूप से निष्क्रिय हो जाता है तो वह कोई भी कार्य नहीं कर पाता। इसलिए कवि ने भी कहा है –

''हरिए ए हिम्मत बिसारिये न हरिनाम।
जाहि विधि राखे राम ताहि विधि रहिये।''

अपने आराध्य के प्रति आस्था मनुष्य के मानसिक बल में वृद्धि करती है। जब वह प्रभु का नाम लेकर मन से कोई कार्य करता है तो कोई कारण नहीं कि उसे उस कार्य में सफलता न मिले। यह अवश्य हो सकता है कि उसे फल प्राप्ति के लिए संघर्षरत रहना पड़े किंतु उसे सफलता अवश्य ही प्राप्त होती है।

इस परिवर्तनशील संसार में सुख और दुःख चक्र के सामान घूमते रहते हैं। अतः जब दुःख के बाद सुख आता ही है तो दुःख से भी नहीं घबराना चाहिए। बुद्धिमान मनुष्य को जीवन के प्रति आशावान दृष्टिकोण अपनाना चाहिए, जिससे वह अपना और अपने राष्ट्र का कल्याण कर सके। हिम्मत हारने से कुछ बनता नहीं, बिगड़ता ही है। दूसरी बात यह है कि दुःख और सुख, सफलता और असफलता सब भगवान की दी हुई वस्तुयें हैं। यदि उसके दिए हुए दुःख से आप घबरा जायेंगे तो वह आपको सुख नहीं देगा।

मनुष्य की मानसिक शक्ति उसकी इच्छा शक्ति पर निर्भर रहती है। जिस मनुष्य की इच्छा शक्ति जितनी बलवती होगी उसका मन उतना ही दृढ़ और संकल्पवान् होगा। इसी इच्छा शक्ति के द्वारा मनुष्य वह दैवी शक्ति प्राप्त कर लेता है, जिसके आगे करोड़ों व्यक्ति नत–मस्तक होते हैं। प्रबल इच्छा शक्ति द्वारा

मानव मृत्यु के क्षणों को भी टाल सकता हैं। भीष्म पितामाह मृत्यु शैय्या पर थे परन्तु सूर्य दक्षिणायन में था। तब भीष्म ने कहा कि, ''मैं अभी प्राण त्याग नहीं करूंगा। जब सूर्य उत्तरायण होंगे तभी प्राणों को विसर्जन करूंगा।'' हुआ भी ऐसा ही। यह सब कुछ इच्छा शक्ति की प्रबलता और मानसिक दृढ़ता का ही परिणाम है। गांधी जी में भी हमें यही शक्ति दृष्टिगोचर होती है, जो वे चाहते थे वही होता था, शत्रु भी उनके आगे नतमस्तक देखे गये। इसी कारण गांधी जी साधारण मनुष्य से महान थे। विध्न–बाधायें मार्ग की रूकावटें सभी के मार्ग में व्यवधान बन कर आती हैं, चाहे वह साधरण व्यक्ति हो या महान। अंतर केवल इतना है कि साधारण मनुष्य का मन विपत्तियों को देखकर जल्दी हार मान लेता है, जबकि महान एवं प्रतिभाशाली व्यक्ति अपने मानसिक बल के आधार पर उन पर विजय प्राप्त करते हैं। विषम परिस्थितियों और उन पर दृढ़तापूर्वक विजय प्राप्त ही मनुष्य को महान् बनाती है। भावी संतान के लिए उनके ये कार्य ही आदर्श बन जाते हैं, उनका पथ–प्रदर्शन करते हैं तथा उन्हें प्रेरणा देते हैं।

आशावान मन मानव–जीवन का संचार सूत्र है। आशा के सहारे मनुष्य बड़े–बड़े वीरतापूर्ण और साहसपूर्ण कृत्य कर दिखाता है। यही आशा मानव को कर्म की प्रेरणा देती है। इसलिए आशा को 'आशा बलवती राजन्' कहा गया है अर्थात् आशा बड़ी बलवान वस्तु है। आशावादी व्यक्ति कभी अकर्मण्य नहीं हो सकता, वह सदा कठिन से कठिन परिस्थितियों में भी प्रयत्नशील रहता है। प्रतिक्षण परिवर्तित होने वाले सांसर में कभी दुःख है, कभी लाभ है, कभी हानि है, कभी उत्कर्ष है, कभी अपकर्ष हैं। ये समस्त विरोधी प्रवृत्तियां क्रमशः आती रहती हैं। बुद्धिमान व्यक्ति इस परिवर्तन को ध्यान में रख कर कभी भी विपत्तियों से नहीं घबराते और न ही अपने मन को हारने देते हैं।

अतः स्पष्ट है कि जो व्यक्ति जीवन में सफल होना चाहता है तथा कुछ करना चाहता है, उस व्यक्ति को कठिन से कठिन परिस्थितियों में भी अपना मन विचलित नहीं करना चाहिए। यदि वह अपने मन की चंचलता को वश में कर सकेगा तो उसका मनोबल भी दृढ़ बना रहेगा। सुदृढ़ मनोबल ही समस्त सफलताओं को प्राप्त करने का प्रमुख साधन है। जिस व्यक्ति का जीवन मानसिक संतापों से युक्त है वह कभी भी सफलता नहीं प्राप्त कर सकता। अर्जुन ने भी अपने मन को वश में करने के पश्चात् ही महाभारत के युद्ध में विजय प्राप्त की थी। इसलिए कहा जाता है कि, ''बुद्धिमान व्यक्ति सदा अपने मन का अनुसरण कर सफलता को प्राप्त होते हैं क्योंकि उन्होंने अपने मन को जीत लिया है।''

अमरदीप
कनिष्ठ अनुवादक (स्वीचिंग), टी.ई.सी.

लेख

भारतीय संस्कृति की विशेषताएं

हजारों वर्ष की परंपराओं से पुष्ट भारतवर्ष किसी समय विश्व गुरू कहलाता था। जिस समय आज के उन्नत एवं सभ्य कहे जाने वाले राष्ट्र अस्तित्वहीन थे या जंगली अवस्था में थे, उस समय भारत भूमि पर वैदिक ऋचाएं लिखी जा रही थीं, वैदिक मंत्रों का गान गूंज रहा था और यज्ञों की पवित्र ज्वालाओं का सुगंधित धुआं पूरे वातावरण को आंनदमय बना रहा था। वृद्ध भारतवर्ष की सभ्यता और संस्कृति महान है। कविवर इकबाल ने जब लिखा है कि –

'यूनान मिस्त्र रोमां, सब मिट गए जहां से,
लेकिन बचा हुआ है, नामो निशां हमारा।'

तो निश्चय ही उनका संकेत भारत की महान संस्कृति की ओर ही था। हमारों वर्ष की पराधीनता का अंधकार हमें हमारी प्राचीन विरासत से वंचित नहीं कर पाया। आज भी हम वैदिक ऋषियों की संतान होने पर गौरव अनुभव करते हैं। रामायण, महाभारत, वेद–पुराण आज भी हमारे पूज्य ग्रंथ हैं। आज भी गंगा, नर्मदा, कावेरी हमारे लिए पवित्र है। भारतीय संस्कृति अजर–अमर हैं क्योंकि वह समय के साथ बदलने की क्षमता रखती है। इसमें मानव–मात्र की रक्षा का भाव निहित है।

संस्कृति वह है जो श्रेष्ठ कृति अर्थात् कर्म के रूप में व्यक्त होती है। कर्म निश्चय ही विचार पर आधारित होता है। जो ज्ञान एवं भाव संपदा कर्मों को श्रेष्ठ बनाती है वहां संस्कृति है। मनुष्य में पशुता और देवत्व का वास एक साथ रहता है। जो भाव या विचार हमें पशुत्व से देवत्व की ओर ले जाते हैं, संस्कृति का अंग माना जाना चाहिए। मनुष्य प्राकृतिक अवस्था में होता है। समाज के प्रभाव एवं उसके अपने अनुभव उसे प्रकृति में विकृति की ओर ले जा सकते हैं और सुकृति की ओर भी। सुकृति अर्थात् अच्छे कार्यों की ओर ले जाना ही संस्कृति का कार्य है। दूध यदि विकृति की ओर जायेगा तो वह फट जाएगा और अनुपयोगी बन जाएगा, यदि सुकृति की ओर जाएगा तो दही, मक्खन, खोया आदि बनेगा। उसकी कीमत कहीं अधिक बढ़ जाएगी। इसी प्रकार मनुष्य यदि पशुत्व अथवा दानवत्व की ओर जाएगा तो उसकी हत्या करनी पड़ेगी, यदि देवत्व की ओर जाएगा तो उसकी पूजा होगी। भारतीय संस्कृति ने सदा ही अंधकार से प्रकाश की ओर जाने की प्रार्थना की है। किसी भी देश अथवा जाति की संस्कृति उसके जीवन मूल्यों, आदर्शों, रहन सहन के तरीकों एवं आस्थाओं और मान्यताओं के रूप में सामने आती है। संस्कृति हमारे भौतिक जीवन को सुधारती है और हमारे एंद्रिक जगत् को परिष्कृत करती है। विचारों एवं भावों का परिष्कार भी संस्कृति का कार्य है। संस्कृति यह कार्य साहित्य, विज्ञान एवं कलाओं का प्रचार–प्रसार करके करती है।

भारतीय संस्कृति की एक विशेषता यह है कि यह संस्कृति किसी जाति अथवा राष्ट्र तक सीमित नहीं। वैदिक ऋषि सारे विश्व को आर्य अर्थात् श्रेष्ठ बनाना चाहता है। वह अपने मंत्रों से संपूर्ण सृष्टि के लिए मंगल

कामना करता है। मानव–मात्र को अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाने का प्रण दुहराता है। भारतीय संस्कृति अपने मूल रूप में मानवीय संस्कृति अथवा विश्व संस्कृति है।

भारतीय संस्कृति अध्यात्मक प्रधान संस्कृति है। भौतिक उन्नति को हमने त्याज्य नहीं माना परंतु उसे आत्मिक जीवन से ज्यादा महत्व नहीं दिया। साधु–महात्माओं की पर्ण कुटियों पर सम्राटों ने सदा ही सिर झुकाया है। संतोष एवं संयम को यहां सदा सम्मान मिला। ईश्वर में अटल विश्वास रखने वाले अधनंगे फकीरों ने यहां के जीव–जीवन को सम्राटों की अपेक्षा अधिक प्रभावित किया। यहां का भांमाशाह तभी सम्मान का पात्र बना जब उसने देश–रक्षा के लिए अपना खज़ाना महाराणा प्रताप को समर्पित कर दिया। त्याग हमारी संस्कृति में सम्मान पाता रहा है।

भारतीय संस्कृति में नारी सदा ही सम्मान एवं पूजा की अधिकारिणी रही है। कृष्ण से पहले राधा और राम से पहले सीता का नाम केवल यहीं लिया जाता है। इसी देश में नारी को शक्ति के रूप में, ज्ञान के प्रकाश के रूप में, लक्ष्मी की उज्जवलता के रूप में देखा जा सकता है। विश्व की अन्य किसी भी संस्कृति में नारी–शक्ति को ऐसा गौरवपूर्ण स्थान नहीं मिला।

भारतीय संस्कृति उदार, ग्रहणशील एवं समय के साथ परिवर्तनशील रही है। अनेक विदेशी संस्कृतियां, इससे टकरा कर नष्ट हो गई या इसी का अंग बन गई। भारत तो मानव समुद्र है। यहां पर शक, कुशान, हूण, पठान, मुसलमान, पारसी, यहूदी, ईसाई सभी आए और सभी ने यहां की संस्कृति को पुष्ट किया। भारतीय संस्कृति इस अर्थ में समन्वित संस्कृति है। यह तो सुंदर फूलों का गुलदस्ता है। सर्वधर्म स्वभाव हमारी संस्कृति की विशेषता है।

सार रूप में कह सकते है भारतीय संस्कृति सही अर्थों में मानव–संस्कृति है, उदार संस्कृति है, अध्यात्म–प्रदान, आदर्श–परक संस्कृति है, मनुष्य में ईश्वरत्व की प्रतिष्ठा करने वाली संस्कृति है।

अमरदीप
कनिष्ठ अनुवादक (स्वीचिंग), टी.ई.सी.

हिन्दी कार्यशाला

राजभाषा हिन्दी के प्रचार प्रसार और टी ई सी कार्यालय में अधिक से अधिक हिन्दी भाषा के उपयोग को बढ़ावा देने के लिए वर्ष की हर एक तिमाही में एक हिन्दी कार्यशाला का आयोजन किया जाता है। इसी क्रम में दिनांक 20.06.2013, 26.09.2013, 31.12.2013 एवं 24.03.2014 को हिन्दी कार्यशालाओं का आयोजन किया गया। इन कार्यशालाओं में मुख्य वक्ता श्री केवल कृष्ण, वरिष्ठ तकनीकी निदेशक, राजभाषा विभाग तथा श्री एच के मक्कड़, निदेशक (तकनीकी), राजभाषा विभाग थे जिन्होनें ई–महाशब्दकोश, हिन्दी अनुवाद के मूल सिद्धांतो, राजभाषा नीति, लीला सॉफ्टवेयर से हिन्दी सीखना, गूगल में अकाउंट बनाकर अनुवाद करने, विंडोज एक्स पी एण्ड विंडोज विस्टा में यूनिकोड सक्रिय करने के बारे में बताया।

दूरसंचार अभियांत्रिकी केंद्र एवं राष्ट्रीय दूरसंचार नीति शोध, नवप्रवर्तन एवं प्रशिक्षण संस्थान द्वारा हिन्दी पखवाड़े का आयोजन

दूरसंचार अभियांत्रिकी केंद्र, नई दिल्ली में दिनांक 14 सितंबर से 28 सितंबर तक हिन्दी पखवाड़े का सफलता एवं उत्साह पूर्वक आयोजन किया गया। पखवाड़े का शुभारंभ वरिष्ठ उप महानिदेशक श्री ए. के. मित्तल द्वारा दीप प्रज्वल्लित कर किया गया। इस अवसर पर सभी उपस्थित अधिकारियों एवं कर्मचारियों के बीच हिन्दी के प्रचार एवं प्रसार हेतु, श्री मित्तल द्वारा माननीय गृह मंत्री श्री सुशील कुमार शिंदे का संदेश पढ़कर सुनाया गया।

इस दौरान राजभाषा हिन्दी से संबधित विभिन्न विषयों पर कुल 9 प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। जिसमें सभी प्रतिभागियों ने बढ़चढ़ कर हिस्सा लिया।

समारोह का समापन श्री अरूण गोलस, उप महानिदेशक की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ जिसमें सभी विजेताओं को पुरस्कार राशि एवं प्रमाण पत्र दिये गए।

राष्ट्रीय दूरसंचार नीति शोध, नवप्रवर्तन एवं प्रशिक्षण संस्थान द्वारा भी हिन्दी पखवाड़े का आयोजन किया गया, जिसके अंतर्गत निबंध एवं प्रश्न मंच की प्रतियोगिताओं का आयोजन हुआ इसमें प्रोबेशनर्स अधिकारियों एवं अल्ट परिसर परिवार के सदस्यों के अतिरिक्त बाहरी व्यक्तियों ने भी उत्साहपूर्वक भाग लिया।

क्र.सं.	प्रतियोगिताओं के नाम	विजेता का नाम	प्राप्त स्थान
1	श्रुत लेख	श्री रामसंवार श्री कलेक्टर सिंह श्री चितरंजन कुमार श्री ललन ठाकुर श्री सभाजीत मिश्रा श्री पोलसन	प्रथम द्वितीय तृतीय सांत्वना सांत्वना सांत्वना
2	हिन्दी टिप्पण और मसौदा लेखन	श्री दीपक चड्ढा श्री रोहित गुप्ता श्री राजेश कुमार श्रीमती सुषमा चोपड़ा कु. मिनाक्षी चौहान कु. नीलम श्रीमती राजकुमारी श्री किशन पाल सिंह	प्रथम प्रथम द्वितीय तृतीय सांत्वना सांत्वना सांत्वना सांत्वना
3	निबंध	श्री राज कुमार श्री निर्भय कुमार श्री राजेश कुमार श्री के.एन.मेहता श्री चितरंजन कुमार श्रीमती राजकुमारी श्री रामवतार	प्रथम द्वितीय तृतीय तृतीय सांत्वना सांत्वना सांत्वना
4	अनुवाद	श्री रोहित गुप्ता श्री मनीष रंजन श्री राजकुमार कु0 मीनाक्षी चौहान	प्रथम द्वितीय तृतीय सांत्वना

क्र.सं.	प्रतियोगिताओं के नाम	विजेता का नाम	प्राप्त स्थान
4	अनुवाद	श्री आलोक जयमल श्री राजेश कुमार	सांत्वना सांत्वना
5	अंताक्षरी	श्री शिवचरण श्री चितरंजन कुमार श्री सभाजीत मिश्रा श्री प्रिथी सिंह श्री राजेश कुमार श्रीमती सुमन शर्मा श्री ललन ठाकुर श्रीमती उषा कुमारी	प्रथम द्वितीय तृतीय सांत्वना सांत्वना सांत्वना सांत्वना सांत्वना
6	हिन्दी व्याकरण	श्री नीरज नयन सक्सेना श्री राजकुमार श्री रोहित गुप्ता श्रीमती कमला परगई श्रीमती सुषमा चौपड़ा श्री मनीष रंजन	प्रथम द्वितीय तृतीय सांत्वना सांत्वना सांत्वना
7	कविता लेखन	श्री राकेश बेदी श्रीमती सुषमा चौपड़ा श्री राजेश कुमार श्री राम अवतार श्री निर्भय कुमार मिश्रा श्री रामचन्द्र वर्मा	प्रथम द्वितीय तृतीय सांत्वना सांत्वना सांत्वना
8	भाषण (अहिन्दी भाषी के लिए)	श्री एन.पी. बधेर श्रीमती शम्पा साहा	प्रथम द्वितीय

बधाईयाँ

पुरस्कार वितरणः हिन्दी पखवाड़ा 2013

राष्ट्रीय दूरसंचार नीति शोध, नवप्रवर्तन एवं प्रशिक्षण संस्थान गाजियाबाद द्वारा आई.टी.एस.-2012 तथा पी.एण्ड.टी.बी. डब्ल्यू. एस.-2011 के परिवीक्षार्थियों के लिए आयोजित ओरियन्टेशन प्रोग्राम

भारतीय दूरसंचार सेवा 2012 बैच के 12 परिवीक्षार्थियों और पी. एण्ड. टी. बिल्डिंग वर्क्स सिविल विंग 2011 बैच के 3 परिवीक्षार्थियों के लिए 10 से 14 मार्च, 2014 को संस्था द्वारा ओरियन्टेशन प्रोग्राम आयोजित किया गया। यह कार्यक्रम परिवीक्षार्थियों को विभाग के वरिष्ठ अधिकारियों द्वारा मार्गदर्शन के उद्देश्य से आयोजित किया गया।

दूरसंचार सचिव श्री एम. एफ. फारूकी परिवीक्षार्थियों को सम्बोधित करते हुये, बायें श्री एस.सी. मिश्रा, सदस्य (सेवाएं)

आर्थिक विकास को दूरसंचार क्षेत्र से जोड़ते हुए श्री फारूखी जी ने बताया कि पिछले दशक में नई तकनीक एवं उचित योजना आने के बाद दूरसंचार क्षेत्र ने निजी कंपनियों को इस क्षेत्र में भागीदारी का मौका दिया। इस प्रतिस्पर्धा ने इस क्षेत्र को नये आयाम दिये। उन्होंने वर्तमान परिदृश्य में सरकारी क्षेत्र के साथ निजी सहभागिता पर जोर दिया। श्री फारूखी ने सभी परिवीक्षार्थियों को ईमानदारी और लग्न से काम करते हुए नई तकनीक से अधतन रहने को कहा।

'अधिकारी अपनी सफलता का आँकलन उसके प्रयासों से आम आदमी की जिन्दगी में आये बदलाव से करें न कि वार्षिक मूल्यांकन रिपोर्ट के आधार पर।''

श्री एस.सी. मिश्रा ने सम्बोधन में परिवीक्षार्थियों को कहा कि जब तक इस दुनियां का अस्तित्व है, संचार क्षेत्र फलता–फूलता रहेगा। उन्होंने बताया कि दूरसंचार क्षेत्र में तकनीकी विशेषज्ञ, तब तक सेवानिवृत नहीं होता जब तक यह प्रतियोगी बना रहता है तथा नई तकनीक से अधतन रहें।

''दूरसंचार क्षेत्र के तकनीकी विशेषज्ञ कभी सेनानिवृत नहीं होते।''

श्री अनिल कौशल, सदस्य (तकनीकी), परिवीक्षार्थियों को सम्बोधित करते हुए, बायें श्री एस.सी. मिश्रा, सदस्य (सेवाएं)

श्री अनिल कौशल ने सबसे पहले परिवीक्षार्थियों को अपने कॅरियर प्रोफाइल में विविधता लाने की सलाह दी। उन्होंने परिवीक्षार्थियों को इकनॉमिक टाइम्स, बिजनस स्टैंडर्ड आदि के साथ–साथ तकनीकी पत्रिकाएं पढ़ने का सुझाव दिया। उन्होंने इस बात पर जोर देते हुए कहा कि कार्य क्षेत्र में प्राप्त अनुभव बाद में योजना बनाने में अहम भूमिका निभाता है।

सुश्री एनी मोरेस, सदस्य (वित), परिवीक्षार्थियों को सम्बोधित करते हुए, बायें सुश्री निर्मला पिल्लई, सलाहकार (वित)

सुश्री एनी मोरेस ने सर्वप्रथम परीवीक्षार्थियों को आई.टी.एस. में कॅरियर चुनने पर बधाई दी क्योंकि यह उनका समाज सेवा का जुनून दर्शाता है। सुश्री मोरेस ने परिवीक्षार्थियों को नवीनतम तकनीक से अधतन रहने की सलाह दी।

''किसी निर्णय की काबिलियत की कसौटी, वह किसे लाभान्वित कर रही है, उस पर निर्भर करती है।''

सुश्री निर्मला पिल्लई ने परिवीक्षार्थियों को बताया कि प्रोद्योगिकी बहुत तेजी से बदल रही है, जिसमें दूरसंचार क्षेत्र सबसे अग्रणी है। उन्होंने परिवीक्षार्थियों से आग्रह किया कि लोकसेवा के उद्देश्य की ललक कभी कम ना हो और प्रोजेक्ट कार्यान्वयन में टीम की तरह कार्य करे।

श्री आर. के. उपाध्याय, सी.एम.डी., बी.एस.एन.एल.

श्री उपाध्याय ने सबसे पहले परिवीक्षार्थियों को दूरसंचार विभाग में करियर चुनने पर बधाई दी क्योंकि दूरंसचार विभाग, दूरसंचार क्षेत्र को नियंत्रित, निर्देशांक और नियमित करता है। दूरसंचार क्षेत्र उन क्षेत्रों में से एक है जिसका राष्ट्र की प्रगति में विशेष योगदान है। दूरसंचार क्षेत्र न केवल प्रत्यक्ष रूप सें रोजगार देता है; अपितु अप्रत्यक्ष रूप में दूसरे क्षेत्रों के लिए उत्प्रेरक का भी काम करता है।

''लोकसेवा के उद्देश्य की ललक कभी कम न हो।''

श्री ए.के.गर्ग, अध्यक्ष एवं प्रबन्ध निदेशक, एम.टी.एन.एल.

श्री ए.के.गर्ग ने बताया कि दूरसंचार क्षेत्र सबसे जीवंत तथा गतिशील क्षेत्रों में से एक है तथा जो राष्ट्र की बेजोड़ सेवा कर रहा है। आज भारत के दूरसंचार क्षेत्र की किसी भी विकसित राष्ट्र के साथ तुलना की जा सकती है तथा परिवीक्षार्थियों को इस बात पर गर्व होना चाहिए कि उन्हें दूरसंचार क्षेत्र में सरकारी सेवा का मौका मिला है। यहाँ उनकी पॉलिसी बनाने में भूमिका अहम होगी। श्री गर्ग ने परिवीक्षार्थियों को लालच के प्रति सचेत किया क्योंकि लालच की कोई सीमा नहीं होती।

श्री विमल वखलू, अध्यक्ष एवं प्रबन्ध निदेशक, टी.सी.आई.एल.

श्री विमल वखलू ने सबसे पहले बताया कि टी.सी.आई.एल. की शुरूआत सन् 1978 में 10 लाख के निवेश के साथ हुई। वर्तमान में 60 से अधिक देशो में दूरसंचार क्षेत्र, आई.टी. सिविल तथा ऊर्जा क्षेत्र (पॉवर सैक्टर) में वार्षिक कारोबार 20,000 करोड़ से अधिक है। उन्होंने परिवीक्षार्थियों को सच्चे, ईमानदार, आशावादी और सभी का सम्मान करने की सलाह दी तथा प्रतियोगी युग में आगे रहने के लिए कुछ नया करने के लिए प्रेरित किया।

श्री ए.के.मित्तल, वरिष्ठ उपमहानिदेशक
टी.ई.सी./एन.टी.आई.पी.आर.आई.टी.

श्री मित्तल ने सर्वप्रथम सभी परिवीक्षार्थियें का स्वागत किया। उन्होंने परिवीक्षार्थियों को अपने कर्तव्य के प्रति सचेत रहने को कहा। श्री मित्तल ने ईमानदारी के रास्ते में आने वाली बाधाओं से न डरने की सलाह दी क्योंकि बाधाएं अस्थायी होती हैं तथा अपना पूरा ध्यान कॅरियर पर लगाने की सलाह दी। उन्होंने सुझाव दिया कि दूरसंचार नीति–2012 ने जो अवसर नई तकनीक के बारे में प्रदान किये हैं उनका पूरा लाभ उठाना चाहिए।

''कोई भी निर्णय यदि उचित परामर्श एवं नियमों के गहन अध्ययन के अन्तर्गत लिया गया है तो उससे कभी भविष्य में परेशानी नहीं होगी।

श्री ए.के.मित्तल, वरिष्ठ उपमहानिदेशक एवं उपमहानिदेशक श्री अरूण गुप्ता परिवीक्षार्थियों के साथ

हिन्दी पखवाड़ा

एक नजर में.....

समापन

दूरसंचार अभियांत्रिकी केन्द्र

दूरसंचार विभाग

खुर्शीद लाल भवन, जनपथ, नई दिल्ली-110001

वेबसाईट : www.tec.gov.in

क्षेत्रीय कार्यालय :

पूर्वी क्षेत्र, कोलकाता

दूरसंचार क्यूए बिल्डिंग, ईपी एण्ड जीपी ब्लॉक,
विधान नगर, सेक्टर 5, कोलकाता-700091

पश्चिमी क्षेत्र, मुम्बई

द्वितीय तल, डी विंग, बीएसएनएल प्रशासनिक भवन,
जुहू डाण्डा, शान्ता क्रूज (वेस्ट) मुम्बई-400054

दक्षिणी क्षेत्र, बंगलूरू

द्वितीय मंजिल, जया नगर टेलीफोन एक्सचेंज,
9 वां मेन, चौथ ब्लॉक, जयानगर, बंगलूरू-560011

उत्तरी क्षेत्र, नई दिल्ली

खुर्शीद लाल भवन, जनपथ, नई दिल्ली - 110001